इनामि तुकमें.

—✻—

श्री जैन श्वेताम्बर वर्द्धमान पाठशाला–नागोर–के विद्यार्थीयो की परिक्षा श्रीमान् जेवंतमलजी रामपुरीया, बीकानेरवालोके अध्यक्षत्व मे ता. ३–१–२९ को ली गइथी, परिक्षाका परिणाम अच्छा रहा. बाद कीतनेक विद्यार्थियोके भाषण भी हुवे. श्रोतागण का चित्त बहुत प्रसन्न हुवा–बीकानेर निवासी विद्याप्रेमियोने उन विद्यार्थियोंके उत्साहमे वृद्धि करनेवाले इनाम—

शाहा भेरूदानजी कोठारीकी तरफसे

१०१) पाठशालाकी मददके लिये—

५) कीसोरराज भन्सालीकों इनामका तुकमा

५) दुलीचंद बैदकों इनामका तुकमा

१०) तमाम विद्यार्थियोंको मीठाई

शाहा उदयचंदजी रामपुरीयाकी तरफसे

४) लक्षीमल चोधरीको इनामका तुकमा

३) विरधीचंद चोधरीको इनामका तुकमा

२) अनोपचंद तातेडको इनामका तुकमा

२) हस्तीमल चोधरीको इनामका तुकमा

अबी पाटशाल स्थापितको पुरे दो वर्ष नही हुवे है। नागोरवालोको चाहिये की इस पाठशाला रूपी कल्पवृक्ष की अच्छी तरहसे देखरेखसंरक्षणमदद करते रहे, ताके भविष्यमें इसके उत्तमफल की आशा रखी जावे। और अन्य ग्रामवालोको भी इसका अनुकरणकर अपने अपने ग्राममें पाठशालाओ या कन्याशालाओ स्थापित करे॥ इत्यालम्.

"प्रकाशक."

श्री ज्ञानप्रकाशमण्डल ज्ञानबिन्दु नं. १

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथश्री

भाषण संग्रह भाग १ ला।

प्रकाशक.

मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजके

सदुपदेशसे

श्री ज्ञानप्रकाशमण्डल मु. रूण.

द्रव्यसहायक—

श्रीरत्नप्रभाकरज्ञानपुष्पमाला

मु. फलोदी—(मारवाड.)

प्रथम आवृत्ति १०००

वीर सं. २४५१ — विक्रम सं. १९८१

धी आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.

किंमत.

' वक्तव्य '

मारवाड नागोरमें श्री जैन श्वेताम्बर वर्द्धमान पाठशालामें हाल हेडमास्तर श्रीयुत उमरावमलजी लोढा जोधपुरवाला हैं आपके नेतृत्वमें करीबन ७० विद्यार्थी पढ रहे हैं आपने अंग्रेजी हिन्दी धार्मीक संगीत व्यवहारीक महाजनी गणतादिका अच्छा अभ्यास कराया है जिस्में भी केइ. विद्यार्थीयोंको तो जमाना हालके मुताबिक भाषण देनेकी तालम भी ठीक दी गइ है जिसका ताजा नमूना यह भाषण संग्रह भाग १ ला आपके करकमलोंमें रखा जाता है आशा है कि अन्य पाठशालाओंमे भी ऐसी कीताबोंको आदरका स्थान मीलेगा और विद्यार्थियोंको इसी माफीक भाषण देनेमें आगे बढायेंगे कारण की बचपणसेही सभाओंके अन्दर भाषण देनेका उत्साहा बढ जायेंगे तो भविष्यमें समाज सेवा करनेमें भी वह अपना जीवन सफल करेंगे और अपने जीवनकों भी उच्च श्रेणिका बना सकेंगे यह ही हमारा उद्देश्य है किमधिकम्।

प्रकाशक.

श्रीमदुपकेशगच्छीय-

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज.

जन्म सं० १९३७ विजयदशमी

स्थानकवासी दीक्षा सं० १९६३

जैन दीक्षा सं० १९७२

अथश्री

भाषण संग्रह भाग १ला.

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय मुनिमहाराजश्री श्री १००८ श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिबका चतुर्मास सं० १९८१ का नागोर सेहर मेहुनासे यहां जो श्री जैन श्वेतांबर वर्द्धमान पाठशालाके विद्यार्थीयों को बहुत अच्छी तालीम मीली जीस्मे भी कीतनेक विद्यार्थीयोंको तो आपश्रीने जमाने हालकी माफीक भाषण देनेमें हुशीयार कर दीया. केइ सभावों में इन विद्यार्थीयोंने भाषण भी दीया जीस्मे मेडतेरोडफलोदी तीर्थपर विद्यार्थी अनुपचन्दने भाषण दीया उसपर श्रोतागणका चित बहुत रंजन हुवा. शेठजी समीरमलजी तथा उदयचंदजी साहिबों बीकानेरवालोने उस विद्यार्थीको तुकमाके लिये रु.५) इनामका दे विद्यार्थीके उत्साहमें वृद्धि करी और सब सज्जनोंने आग्रे कीया की इन सब भाषणोंको छपा दीया जावे तो अन्य पाठशालाओं के विद्यार्थी भी लाभ उठा सके इस वास्ते ही इन भाषणोंको छपानेका प्रयत्न कीया गया है। विद्यार्थी सुखपूर्वक कंठस्थ कर सके इस वास्ते छोटे छोटे भाषण रखा गया है अगर विद्वान् इन भाषणोंको देगा तो इससे भी विस्तारपूर्वक दे सकेगा।

भाषण नम्बर १

देवस्तुति

नेत्रानन्दकरी भवोदधितरी श्रेयस्तरोर्मञ्जरी ।
श्रीमद्धर्ममहानरेन्द्रनगरी व्यापल्लता धूमरी ।
हर्षोत्कर्षशुभप्रभावलहरी रागद्विषां जित्वरी ।
मूर्तिः श्रीजिनपुङ्गवस्य भवतु श्रेयस्करी देहिनाम् ॥ १ ॥

गुरु स्तुति ।

भो भो प्रमादमवधूय जना भजंतं ।
सज्ज्ञानसुन्दरमतिं सकलागमज्ञं ।
श्री ज्ञानसुन्दरमुनिं मुनि सत्तमंहीं ।
येनाचिरेण भव निस्तरणं भवेद्वः ॥ १ ॥

प्यारे श्रोतागण !

आज मैं आप श्रीमानोंकी सेवामें खड़ा हो विद्याके विषयमें दो शब्द कहना चाहता हूं आशा है कि आप शांत चितसे श्रवण करेंगे, सज्जनो ! यह बात तो आप बखुबी जानते हो कि आज जो चौ तरफसे घनघोर अवाजें हो रही है कि अविद्याका मुँह काला कर विद्याके प्रवाहको बढ़ाईये, देशकी नगरकी ग्रामकी और मनुष्यकी उन्नती जबही हो सकती है कि जहां विद्याका प्रचार बढ़ता हो, वगर

विद्या मनुष्यका जीवन पशुके तुल्य माना गया है देखिये. नीतिकारों ने क्या अच्छा फरमाया है,

विद्यानाम नरस्यरूपमधिकं मच्छन्नगुप्तं धनं ।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्यागुरूणां गुरुः ॥
विद्या बन्धु जनो विदेशगमने विद्यापरं दैवतं ।
विद्या राजसु पूज्यते नतुधनं विद्याविहिनः पशुः ॥१॥

सज्जनो ! विद्याही मनुष्यका अधिक रूप है चाहे मनुष्य वस्त्र भूषण रहीत रूपहीन हो; किन्तु विद्यावान् मनुष्य जैसे

यद्यपि भवति विरुपो, वस्त्रालंकार वेश परिहीणः ।
सज्जन सभां मविष्ट, शोभामुद्वहति सद्विद्यः ॥

विद्यावान् मनुष्य सज्जनोंकी सभामें प्रवेश करता है तब वह रूपवानोंसे भी अधिक आदर पाता है वास्ते विद्याही मनुष्यका अधिक रूप है । विद्याही प्रच्छन्न-गुप्तपने एक किस्मका अक्षय खजाना है. " नीतिकारोंने क्या सुंदर फरमाया है "

न चोर हार्यं न च राज हार्यं, न भ्रातृ भाज्यं नच भारकारी ।
व्ययेकृते वर्द्धते एव नित्यं, विद्या धनं सर्व धनं मधानम् ॥

विद्यारूपी धनको न कोई चोर चोर सकता है, विद्यारूपी धनको न कोई राजा दंडमें ले सकता है, विद्यारूपी धनको न कोई भाई गोत्री बैंटा सकता है, विद्यारुपी धन देश प्रदेश जाते समय साथ लेनेमें भारभी नही होता है और धनतो दूसरोंको देनेसे खूट जाना है किन्तु विद्यारूपी धन दूसरेको देनेमें कभी कम नही होता है; किन्तु

नित्य वृद्धि हुवा करता है ईस वास्ते शास्त्रकारोंने सर्व धनके अन्दर विद्यारूपी धनको प्रधान धन माना है विद्याही सुरसदश भोग और सुखकी दातार है विद्यासे ही मनुष्यकी यशः कीर्ति और उन्नति हुवा करती है विद्याहीसे मनुष्य गुरुता पदको धारण कर जगतका गुरु बन जाता है विद्याही मनुष्यके देश विदेशमें बन्धु है अर्थात् राजातो एक अपने देशमें ही पूजा सत्कार पाया करता है पर विद्वान देश विदेशमें पूजा करने योग्य बन जाता है। विद्या है वही पुरुषोका भाग्य है विद्यावान पुरुष राजा महाराजाओंसे पूजा जाता है जितना आदर सत्कार विद्यावानोंका होता है उतना धनवानोंका नहीं होता है वास्ते सर्व कार्योको छोड पहले विद्याभ्यास करना चाहिए क्युंकि विद्या विहीन पुरुषोको शास्त्रकारोंने पशु समान माना है इस लिये हमारा नम्रतापूर्वक यह निवेदन है कि पशुपने के कलंकसे बचाव करनेका एक ही उपाय विद्या है वास्ते विद्याहीका प्रचार करना और करानेकी परमावश्यक्ता है और भी आप कवियोंकी विद्वत्ता सुनिये.—

न ज्ञान तुल्यः किल कल्पवृक्षो, न ज्ञान तुल्यः किल कामधेनुः ॥
न ज्ञान तुल्यः किल काम कुम्भो, ज्ञानेन चिंतामणि रप्य तुल्यः ॥

ज्ञानकी बराबरी न कल्पवृक्ष कर सकता है ज्ञानकी बराबरी न कामधेनु कर सकती है ज्ञानकी बराबरी न मनोकामना पूर्ण करने वाला कामकुम्भ कर सकता है, सज्जनो ? चिंतामणि रत्न भी ज्ञानकी बराबरी नहीं कर सकता इस वास्ते प्रथम ज्ञानाभ्यास करना चाहिए देखिए एक भाईको पांच रुपिये महावारी नहीं मिलता है

तब ज्ञानी पुरुष एक मासका पांच हजार रुपये पाते है क्या यह ज्ञानहीका महत्व नहीं है अन्तमें मैं आपको दो कवियोंकी कवीता सुनाके मेरा भाषण समाप्त करता हूं:—

ज्ञान घटे नर मूढ़की संगत, ध्यान घटे चितको भरमाये।
सोच घटे ज्यूं साधुकी संगत, रोग घटे कछु औषध खाये॥
रुप घटे परनारीकी संगत, बुद्धि घटे बहु भोजन खाये।
वैताल कहे विक्रम सुनो, कर्म घटे ज्युं प्रभुगुण गाये॥ २॥

इसपर एक दूसरे कविने कहा, अरे कवि ? क्या तुमको दुनियामें गाटाही गाटा दीखता है ? तुम कुछ मेरे भी तो सुनलो:—

ज्ञान बढे गुणवानकी संगत, ध्यान बढे तपसी संग कीनो।
मोह बढे परिवारकी संगत, लोभ बढे धनमें चीत दीनो॥
क्रोध बढे नर मूढ़की संगत, काम बढे त्रिया संग कीनो।
बुद्धि विवेक विचार बढे, कवि दीन कहे सुसज्जन संग कीनो॥१॥

बस इतना ही कह कर मैं मेरे स्थानको ग्रहण करता हुं अनुचितकी क्षमा चाहताहुं ' जयबोल सरस्वती माताकी जय '

मुता दुलीचन्द बैद (नागोर).

भाषण नम्बर २

प्यारे सज्जनो!

आज हमारे भाई साहिब दुलीचन्दजीने विद्याका महत्त्वके बारे में जो भाषण दिया है उसे हम सब सहर्ष अनुमोदन करते हैं बात भी ठीक है कि विद्याके सिवाय मनुष्य की उन्नति नहीं हो सक्ती है साथमें यह भी तो कहना होगा कि विद्या कोई बालकों का खेल नहीं है कि हंसते खेलते एस आराम मोजमजा करते ही आ सके. विद्यार्थी भाइयों को प्रथम तो नीतिकारों के कहने माफिक पांच लक्षण प्राप्त करना चाहिए:—

काक चेष्टा वकू ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च।
स्वल्पाहार स्त्रियास्त्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणः॥

कौवेकी माफिक विद्यार्थीयों को सबक घोकने मे चेष्टा रखनी चाहिए जिस शब्दको याद करना हो उस पर बुकको माफिक ध्यान देना चाहिए विद्यार्थीयों को श्वानकी माफिक स्वल्प निद्रा होनी चाहिए, विद्यार्थीयों को आहार भी स्वल्प करना जरूरी है कारण आलस नहीं आवे, शरीर मे अजीर्णादि बिमारी न होनेसे सुखपूर्वक पढाई होती रहे, विद्यार्थीयों को विद्याभ्यास समय स्त्रियोंका भी त्याग करना चाहिए और भी नीतिकार फरमाते हैं जरा सुन लिजीये.

सुखार्थी त्यजते विद्यां, विद्यार्थी त्यजते सुखम्।
सुखार्थी नः कुतो विद्या, सुखं विद्यार्थीनः कुतः॥

अगर ऐश-आराम खाना पीना हँसना खेलना रूपी सुखका अर्थी हो उसे विद्या की प्राप्ती नहीं होती है अर्थात् मानो उसने विद्या का त्यागही किया है और जो विद्यार्थी है उसे उपरोक्त सुखोंका त्याग करना चाहिए कारण विद्याभ्यास करनेसे वह सुख तो सहज ही में मिल जायगा अर्थात् वह सुख तमाम उमर तक उससे अलग न होगा, यह बात तो आप सज्जन स्वयं जान सकते है कि सुखार्थीको विद्या कहां और विद्यार्थीयों को पढते समय सुख कहां है नीतिकारोंने विद्या ग्रहन करनेवालों के लिये क्याही अच्छा फरमाया है:—

विद्या विनयतो ग्राह्या, पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थो नैव विद्यते ॥

विद्याका आगमन विनयसे होता है अर्थात् गुरुवोंका विनय या भक्ति करनेसे विद्या प्राप्त हो सकती है या 'पुष्कलेन' यनि बहुत धन खर्च करनेसे, अर्थात् विद्यागुरुको धनसे संतुष्ट करनेसे विद्या आ सकती है या अपने पास किसी प्रकारकी विद्या हो उसे दूसरोंको दे के उसके बदले में विद्या प्राप्त कर सकते है इन तीनों कारणों के सिवाय विद्या प्राप्त करनेका चौथा कारण कोई भी नहीं है। सज्जनों ! विद्याग्रहन करनेको अभ्यंतर और बाहिर दोनों साधनकी परमावश्यक्ता है कहा है कि—

आरोग्य बुद्धि विनयोद्यम शास्त्ररागा:,
पञ्चान्तरा: पठन सिद्धिकरा भवन्ति।
आचार्य पुस्तक निवास सुसंग भिक्षा,
बाह्यास्तु पञ्च पठनं परिवर्धयन्ति ॥ १ ॥

प्यारे विद्यार्थी भाइयों ! आप ध्यान देकर सुनिये, शरीर आरोग्य, प्रबल बुद्धि, गुरु आदिका विनय, पुरुषार्थ, और पढनेपर पूर्ण राग यह पांच कारण तो अभ्यंतर हैं पढानेवाला आचार्य, पढनेके लिये पुस्तकें, अच्छा सुन्दर मकान, यानि विद्याभवन, विद्वान पुरुषों की संगत, और खानेके लिये गजामाल जो मगजको तरावट पहुँचानेवाला हो। एवं पांच बाह्य कारण हैं ये कारण मिलनेसे मनमानी विद्या पढ मनुष्य विद्वान हो सकते हैं कहा है कि:—

' विद्यासमं नास्ति शरीर भूषणम् '

विद्याके समान मनुष्यका कोई भूषण नहीं है, एक भाषाके कविने भी कहा है कि:—

विद्या विना रूप रंग होय तो भी राख रूप,
विद्या विना धूल जैसा सब ही निधान है;
विद्या विना विनय विचार रहसके नहीं,
विद्या विना पोटाईका खोटा अभिमान है;
विद्या विना नाम ठाम लोकमें न रहे भार,
विद्या विना जहां जावे तहां अभिमान है;
कविज्ञान कहत साच विद्या यही मोटी बात,
एक विद्या विना नर पशु के समान है.

सज्जनों ? ऐसे सैकडो कवियोंने विद्याका महत्व बतलाया है प्रत्यक्ष में भी विद्यादेवी सर्व मनोकामना पूर्ण करनेवाली है वास्ते हजारों कष्ट भी क्यों न पड़जाय परन्तु आपने जो विद्याग्रहण रूप

प्रतिज्ञा की है उसे तो अवश्य पूर्ण करना चाहिए, इत्यलम् इतनाही कह मैं मेरे स्थानको स्वीकार करता हूँ अनुचितकी क्षमा प्रदान करावें।

चौधरी विरधीचन्द

—※◎※—

भाषण नम्बर ३

मान्यवर महोदय सभासदों ?

आज आप श्रीमानों की उपस्थिती देख मुझे बड़ा ही आनन्द होता है हमारे उत्साही भाइयोंको भाषण देते देखकर मेरा भी दिल चाहता है कि मैं भी मेरे सज्जनों की सेवामें दो शब्द सुनाऊं, आशा है कि आप सज्जन शान्त चित्तसे श्रवणकर मेरे उत्साह में अवश्य वृद्धि करेंगे।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ।
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय॥
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय।
तुभ्यं नमो जिनभवोदधि शोषणाय॥

प्यारे सभासदों आज चौतरफसे दिखाई दे रहा है कि प्रत्येक समाज अपनी अपनी उन्नती के उपाय सोच रही है और उन्नती में बाधा करनेवाली सगब हानिकारक रूढियों को सर्प कंचुक की माफिक त्याग कर रही है हमारे समाज अग्रेसर और नवयुवक उन बातोंको दृष्टी से देख रहे हैं कभी कभी हमारे उत्साही महाशयजी एकत्र होते हैं तब

बातें मारते हैं कि आज नाइयोंकी समाज में यह सुधार हुवा है आज दर्जियों की समाज में यह सुधार हुवा है आज भंगियोंने यह सुधार किया है आज अमुक ग्राम में ढेढोंकी समाज एकत्र हो यह बंदोबस्त किया है इत्यादि जमानेका प्रकाश देख उन उत्साही वीरोंके हृदयमें समाज की हानिकारक रूढियां खटकने लग जाती है कदाच कभी कभी प्रयत्न भी करते हैं परन्तु अपनी समाजमें प्रेम स्नेह मेल मिलाप ऐक्यता कम होनेसे सफलता में केई बाधाएँ उपस्थित हो जाति है यह बातें कभी कभी हम बालक भी सुनते हैं तब हमे तो यही ख्याल होता है कि उन्नती यह कोई वृत्त होगा और उसके मधुर फल हमारे पूज्य वृद्ध सज्जन प्राप्त करेंगे तो उसे हम भी चखेंगे, कभी कभी रात्रीमें हमे इन बातोंके स्वप्ने भी आया करते हैं परन्तु जब जागते हैं तब कुछ भी नहीं ? सज्जनों ? अब हम बालक भी कुछ कुछ समजने लग गये हैं कि हमारे पूज्य समाज अग्रेसरें उन्नतिके लिये एकत्र होते हैं तब दो चार बातें इधर उधरकी मारते है एक दो बातें पहले की द्वेष भावसे भरी हुई निकाल आपसमें रेतुंकी वर्षाद वर्षाके उठजाते है दूसरी दफे एकत्र होनेमें लोग इतने घबडाते है कि जैसे काला नागसे डरते हों यह हमारे वृद्धजनों की उन्नती और उन्नतीके उपाय है केइ सज्जन सेखसलीवाले मनके मोदक खानेमें लंबीचोडी हाका करते है । पूज्यवरों ! जरा नीतिकारोंके वाक्य को सुनिये.—

> उद्यमेन ही सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
> नही सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविश्यन्ति मुखे मृगाः ॥

कार्यकी सिद्धि उद्यम पुरुषार्थ करनेसे ही होती है नकि केवल मनोरथ यानि लम्बी चौडी सेखसलीवाली बातें करनेसे जैसे सिंह एक बनका राजा महा प्राक्रमी होता है परंतु बगैर उद्यम किये सोते हुवे के मुखमें मृग कभी प्रवेश नहीं होता है अगर मनुष्य विचारे हुवे कार्यको प्रारम्भ कर धीरे धीरे करे तो भी कार्य हो सकता है जैसेः—

धन संग्रह और पन्थ चलन, गिरि पर चढत सुजान ।
धीरे धीरे होत सवी, ज्ञान ध्यान बहुमान ॥
शनैः पन्थाः शनैः कन्थाः शनैः पर्वत लङ्घनम् ।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः ॥

पन्थका चलना, कथाका कहना पर्वतका उलङ्घना विद्याभ्यास का करना द्रव्योपार्जन करना यह सब धीरे धीरे ही हुवा करता है वास्ते धीरे धीरे उद्योग करनेसे मनुष्य उन्नतिको प्राप्त हो सकते है नीतिकारोंने मनुष्योंका लक्षही उद्योग करना बतलाया है

अश्वस्य लक्षणं वेगो, मदो मातङ्ग लक्षणम् ।
चातुर्य लक्षणं नार्या, उद्योगः पुरुष लक्षणम् ॥

अश्वका लक्षण वेगसे चलने का है, हस्तीका लक्षण धैर्यता के साथ मंद चलनेका है स्त्रियोंका लक्षण चातुर्यपनेका है और पुरुषोंका लक्षण उद्योग करनेका है ऐसी जगतमें कौनसी वस्तु है कि उद्योग करनेसे प्राप्त न हो के अर्थात् उद्योगसे दिलचाहे वही वस्तु प्राप्त हो सकती है मैं एक बालक हूं ज्यादा कहना नहीं चाहता हूं तथापि हमारा दिल रुक नहीं सकता है.

कहां गया हमारे पूर्वजोंका उद्योग,
कहां गया हमारे पूर्वजोंका पुरुषार्थ,
कहां गई हमारे पूर्वजोंकी धैर्यता,
कहां गई हमारे पूर्वजोंकी गांभीर्यता।
कहां गया हमारे पूर्वजोंका उत्साह,
कहां गई हमारे पूर्वजोंकी कार्य कुशलता।
कहां गया हमारे पूर्वजोंका प्रेम,
कहां गया हमारे पूर्वजोंका मेल मिलाप।
कहां गई हमारे पूर्वजोंकी परोपकार बुद्धि,
कहां गया हमारे पूर्वजोंका आत्मबल।
कहां गया हमारे पूर्वजोंका बुद्धिबल,
कहां गया हमारे पूर्वजोंका समाज हितैतैपीपन।
कहां गया हमारे पूर्वजोंका जाति अभिमान,
कहां गया हमारे पूर्वजोंका धर्माभिमान।
कहां गई हमारे पूर्वजोंकी संघ सक्ती,
कहां गया हमारे पूर्वजोंका पंश्च पाणी ॥

सज्जनों ! जो कुछ है वह दुनियामे पानी ही है एक भाषा कविने क्या ही सुन्दर अच्छा कवित फरमाया है:—

पानीके काज धान पान सुखजात
पानीके काज मयूर बोलै

पाणीके काज रामचन्द्र रणको चढे ।
पाणीके काज रावण खोई जिन्दगानी है ॥
पाणीके काज घोडेको रातब मीले ।
पानीके काज मीन हारी जिन्दगानी है ॥
पानीके काज हीरा पुखराज मणी ।
पानीके काज मोतीयनकी किमत हलकानी है ॥
पानीके काज रणमें भूझत शूरवीर ।
पानीके काज सती आगमें जलानी है ॥
कहत गुरु ज्ञानी जाके नहीं पानी ।
ऐसे मनुष्योंका जन्म धूलधानी है ॥

प्यारे भ्रातृगण ? एक दिन हमारा वह था की छत्रीस [३६] कोम हमारे हांथ नीचे रहतीथी, राजतंत्र और व्योपार ओसवालों केही ईजारेमें था आज वही ओसवाल जाति आपसमें एक दूसरे से द्वेष ईर्षा के मारे आपसमें फूट झगडे रगडे से प्रेमबन्धनका तोड तनसे मनसे और धनसे कमजोर हो दुनियामें हसीके पात्र बन रही है। समाज अग्रेसरों ? अबतो आप कुम्भकरणी निद्रासे जागो ! और अपनी समाज को संभालो, समाज आपके आधारपर है आपके विश्वासपर है विश्वासघाति न बनिये अगर आप कभी भ्रमर चक्रमें पड गये हो तो हम गरीबोंके रुदन परही गौर करो। हमारे विद्यार्थी भाई आप श्रीमानोंकी सेवामें उन्नतीके उपाय और बाधाकारी महान् भयंकर रूढियोंके कारण निवेदन करते रहेंगे, मुझे पूर्ण आशा है कि आप उसपर अवश्य ध्यान

देवेंगे, इत्यलम् इतनाही कह मैं मेरे स्थानको स्वीकार करता हूं मुझ बालकसे अगर कोई अनुचित शब्द कहा गया हो तो आप सज्जन क्षमा करावें आशा है कि आप इन बातों पर विचार करेंगे तो हमारी उन्नति शीघ्र ही होगा ॥ ॐ शान्तिः ३.

चौधरी लक्ष्मीमल.

—✻◎◎◎✻—

भाषण नम्बर ४

पूज्य बुजर्गों और प्यारे आत्मबन्धुओ !

विद्वानोंकी सभा में बालकोंका खडा होना तो क्या परन्तु सभामें प्रवेश होना डरपोक जमाने में बडा ही दुष्कर था पर आज निर्भय जमाने में हमारे जैसे बालकोंका भी चित्त सभाकी और आकर्षित हो रहा है यहभी एक जमानेकी ही बलीहारी है। सज्जनों ! क्या आप अपने बालकोंके दो शब्द सुननेकी सहायता रखेंगे, अगर रखते हो तो मेरे उत्साहको बढाईये:—

तुभ्यं नमः कुशलमार्ग विधायकाय ।
तुभ्यं नमो विकटकष्ट निषेधकाय ॥
तुभ्यं नमः दुरत रोग चिकित्सकाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतहृदयभूषणाय ॥ १ ॥

सज्जनों ! हरेक आदमी छोटेसे ही बडा हुवा करता है ! क्योंकि अन्दर बचपनसे ही जैसी जैसी आदतें डाली जाती है वह संस्कार

तमाम उमर तक बना रहता है। हमारे पूज्य पिताओंको चाहिए कि वे प्रथमसे अपने बाल बच्चोंको अच्छे कार्य्यमें प्रवृत करावे, छोटे छोटे बच्छडों पर किसानलोग धोरी बैलोंका विश्वास रखते है इसी माफिक हमारे बुजर्गोंको बाल बच्चोंपर विश्वास रखना चाहिए कि आज वह बालक है कल वही हमारी समाजका नेता होगा वास्ते बालकोंको पहले विद्याभ्यास कराना जरूरी है कहा है कि:—

अविद्या जीवनं शून्यं, दिक् शून्या चेदबन्धवा।
पुत्र हिनं गृहं शून्यं, सर्व शून्या दरिद्रता॥ १॥

विद्या वगर मनुष्यका जीवन शून्य है बन्धव वगर दिशा शून्य होती है पुत्र वगर ग्रहस्थोंका घर शून्य होता है और दारिद्रता होनेसे सब बातें शून्य है। इस वास्ते विद्या प्रथम पढानी चाहिए, विद्या होगी तो सर्व सम्पत्ति प्राप्त हो जायगी, नीतिकारोंने विद्याग्रहन करनेके उपाय बतलाते है:—

विद्या विनयतो ग्राह्या, पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थो नैव विद्यते॥

अवल तो विद्या विनयसे ग्रहन की जाती है दूसरा पुष्कल यानि बहुतसा द्रव्य खर्च करनेसे या अपने पासकी विद्या देनेसे विद्या मिलती है इन तीन कारणोंके सिवाय चौथा कोई कारण विद्या ग्रहण करनेका नहीं है. विद्या वगर संसार में सुख नहीं है सुखका एक कारण धन है यह भी विद्या वगर नहीं मिलता है जैसे—"यत्र विद्यागमो नास्ति, तत्र [illegible]" अर्थात् जहां विद्यागमन नहीं है

वहां धनागमन तो स्वयं ही नष्ट हो ही जाता है—और भी कहा है कि " नच विद्यासमो बन्धु " विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्याग्रहण करनेमें तनतोड़महनत करें कारण नीतिकारोंने यह भी फरमाया है:—

काक चेष्टा बक ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च ।
स्वल्पाहारस्त्रियास्त्यागी, विद्यार्थी पञ्च लक्षणः ॥

पाठ घोखने में कौवेकी माफिक चेष्टा रखनी, सबकपर बककी तरह ध्यान रखना विद्यार्थीयों को स्वल्प निद्रा लेनी, स्वल्प भोजन करना और औरतोंसे दुर रहना ये विद्यार्थीयों के पांच लक्षण है, मातापिताओं को चाहिए कि उन पुत्रोंको जैसे बने वैसे ही पढावे, पाटी पेन पुस्तक आदि देनेमें किसी प्रकारका संकोच नकरे लाडकर अपने घर नरखे पढाई में खलल न पहुँचावे, बचपनमे विद्यार्थीयोंकी सादी न करें, या पढाई छोडाके विदेश न भेजे । कारण

सज्जनो ! विद्या कोइ सामान्य वस्तु नहीं है किन्तु जगत्मे जो बढीयासे बढीया सुख है वह विद्यासे ही प्राप्त होता है एक सुन्दर कविने विद्याका क्या सुन्दर महत्व बतलाया है उसेभी आप सुन लिजिये ।

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयो ।
धेनुः कामदुघा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा ॥
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणं ।
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्व विषयं विद्याधिकारं कुरू ॥ १ ॥

विद्या है सो मनुष्यकी अतुल कीर्ति यशः करानेवाली है मनुष्यका भाग्य भी विद्याके आश्रयत रहा हुवा है कामधेनु कामकुंभ चित्रावेली और चिन्तामणि रत्नतुल्य आनन्दकी देनेवाली मनोकामना पूर्ण करनेवाली सर्व सम्पति की दातार एक विद्याही है. मनुष्यके दो नेत्र तो कुदरती होते हे (किन्तु अज्ञानी लोगोंको नेत्र होनेपरभी विद्वान् अन्धाही कहा करते है) पर विद्याशील मनुष्योंके विद्या और भी तीसरा नेत्र हे. विद्या है वह सत्कारका तो एक विशाल प्रासाद ही है जहां जाते है वहां विद्यावानका आदर सत्कार हुवा करता है विद्या है सो कुलकी महिमा है जो सुन्दर कार्य जीस कुलमें नहीं हुवा वह विद्यावान कर बतलाते हे ताके चिरकाल तक उस कुलकी महिमा भूमण्डलपर रहती है विद्या है सो विगर रत्न मनुष्योंका भूषण है इसलिये नीतिकारों फरमाते है की प्रथम सर्व कार्योंकी उपेक्षा कर विद्याध्ययन अवश्य करना चाहिये।

जिन सज्जनोंको विद्याका प्रेम नहीं है वह लग्नसादि मृत्युके पीच्छे दो घंटाकी खोटी शोभा वाह-वाहके लिये तो हजारो लाखो रूपैयों का पाणी कर देते है. जहां विद्याभ्यासके लिये पाठशालाओंका या अपने बचोंकी पढाइका कार्य होता है उसमें मुंह नीचाकर पीच्छे हट जाते हे अर्थात् मुंजी बन बेठते है उन धनाढयों को सोचना चाहिये की:—

अन्नदानं परंदानं, विद्यादानं मतः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्ति, यावज्जीवत विद्यया ॥ १ ॥

अन्नदान दुनियाँ में श्रेष्ट है किन्तु विद्यादान अन्नदानसे भी अधिक श्रेष्ठ है, कारण अन्नके देनेसे क्षणमात्र के लिये तृप्ति होती है पर विद्यादानसे नाम उम्मर तक सुखी हो जाते है वास्ते विद्यादान देनेमें पीछा न हटना चाहिये। नीतिकारोंने तो यहांतक कहा है कि अगर मनुष्य दिनभरमें चार पैसा पैदा करे तो एक पैसा विद्याभ्यासमें एक पैसा धर्मकार्योंमें लगाना और बचे सो दो पैसासे अपना गुजारा करना चाहिये। क्या आप भी इस पोंईट पर चल सकोगे? मुंहसे कहनेसे अब काम नहीं चलेगा कुच्छ न कुच्छकर बतलानेका जमाना आ पहुंचा है विद्याही आपके उन्नतिका मुख्य कारण है बस।

अन्तमे मैं एक भाषा कविकी कवितापर ही मेरा भाषण समाप्त करता हूं:—

काज बिना न करे कोई उद्यम, रीस बीना रण मांहि न झूमे।
शरीर बिना न सधे परमारथ, शील बिना नरदेही न शोभे॥
नियम बिना न लहे निश्चयपद, भेद बिना रस रीत न बूझे।
ध्यान बिना न थंभे मनकी गति, ज्ञान बिना शिवपन्थ न सूझे॥

इस कविताके शब्दों के साथ विद्याकी कीतनी रहस्य भरी हुई है उसे समझ कर विद्या पढो पढावो और पढतोंको सहायता दो यही आपके उन्नतिका प्रथम मंगलाचरण है इतना कह मैं मेरे स्थानको स्वीकार करता हूं अनुचित.की क्षमा चाहता हूं॥ इति॥

बोथरा हस्तिमल (नागोर)

—※※—

भाषण नम्बर ५

प्यारे सभासदों ? आज चोतरफ भाषणोंके गुंजार शब्दोंने हमारी कुम्भकरणी निद्राका अन्त कर हमें जाग्रत कर दिया है जिसका यह प्रत्यक्ष नमूना है कि हमारे जैसे बालकभी उत्साह पूर्वक दो शब्द बोलनेको आपकी सेवामें खडे हुवे है.

पार्श्वनाथ नमस्तुभ्यं, विघ्नविध्वंसकारिणे ।
निर्मलं सुप्रभातं ते, परमानन्द दायिनः ॥

आज ग्रामो ग्राम देशो देश नगरो नगरमें सभाओं मण्डलों कमेटियां मिटिंगे द्वारा विद्वान लोक पूर्ण परिश्रम कर रहे हैं और कहते हैं कि:—

पठतो नास्ति मूर्खत्वं, जपतो नास्ति पातकं ।
मौनिनः कलहो नास्ति, न भयं चास्ति जाग्रतः ॥

ज्ञानाभ्यास करनेसे मूर्खत्वका नाश होता हैं ईश्वर यानि परमात्माका जाप करने से पाप कर्मोंका नाश होता है, मौनव्रत धारण करने से कलहका नाश होता हैं कारण एक कविने कहा है कि:—

देतो गाली एक है पलटयाँ होत अनेक ।
जो गाली पलटे नहीं तो रहे एक की एक ॥

और जाग्रत यानि सावधान रहनेवालों को किसी प्रकारका भय नहीं रहता है विद्यार्थी भाइयों ? आपको अपना मूर्खत्व गमाना हो तो पहले पठन पाठनका खूब प्रयत्न करना चाहिए, कितनेक वि-

द्यार्थी भाईयों एसे आलसी वन जाते है कि थोडासा ज्ञान पढके प्रमादी बन पाठशाला छोड देते है उसका फल क्या होता है उसपर भी एक कविने कहा है कि:—

आलस्येन हतो विद्या, प्रलापेन कुलस्त्रियः ।
अल्प बीजं हतं क्षेत्रं, हतं सैन्यमनायकम् ॥

आलस रुपी कुठार विद्या वृक्षको मूलमे काट डालता है अधिक प्रलाप करनेसे स्त्रियां अपने उत्तम कुलका नाश करती हैं स्वल्प बीज खेतका नाश करता है और विना नायक के सैन्यका नाश होता है वास्ते हमारे विद्यार्थी भाइयोंको आलस्यका त्याग करना जरूरी है अगर टाइम कम मिलती हो या अपनी बुद्धि कम हो तो भी निरुत्साही कभी नहीं बनना चाहिए, कारण नीतिकारोंने कहा है:—

श्लोकार्धं श्लोक पादंवा, समस्त श्लोकमेव वा ।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद्, दानाध्ययन कर्मणि ॥

आधा श्लोक, पाव श्लोक या सम्पूर्ण श्लोकका प्रतिदिन अभ्यास अवश्य करना चाहिए जो विद्यार्थी दिनभरमें एक अक्षर भी नहीं सीखता हो उसका दिन वन्ध्या औरतकी माफिक निरर्थक है कितनेक हमारे विद्यार्थी भाई कुछ थोडा बहुत लिखना पढना हिसाब वगेरह सीखनेपर आप अभिमानी और इधर उधरकी बाते करनेमें पटु बन जाते है परन्तु आखिर उसका नतीजा क्या होता है उसके लीये नीतिकारोंने कहा है कि:—

अल्पतयोश्चलत्कुम्भो, अल्प दुग्धाश्च धेनवः ।
अल्प विद्यो महा गर्वी, कुरुपो बहु चेष्टितः ॥

यह आप निश्चय कर समझ लेना कि आधा घडा होगा वही झलकेगा, कम दूध देनेवाली गायही लातें मारेगी, अल्प विद्यावाला ही गर्व अधिक करेगा और कुरूपी औरतही ज्यादा चला चेष्टाएं करेंगी इस वास्ते विद्यार्थीयोंके माता पिताओं को चाहिए कि वे अपने लडकोंको १५ या १६ वर्षका हो वहां तक विद्याभ्यास करावें अगर पहलेसे ही विद्यामें कसर रखी जाय तो तमाम उमर तक कसरें आगे चली रहेंगी क्युंकि कम पढा हुवा ज्यादासे ज्यादा २००–३००–या ४०० की साल कमावेगा, पर विद्वान लडका १०००, २००० या ५००० की साल कमावेगा। इसपर खूब गहरी दृष्टिसे हमारे भाईयोंको विचार करना चाहिए, अन्तमें मैं एक भाषा कविकी कविता सुनाके मेरे भाषणको समाप्त करता हूं:—

पग विन कटे न पन्थ, बांह विन हटे न दुर्जन।
तप विन मिले न राज, भाग्य विन मिले न सज्जन॥
गुरु विन मिले न ज्ञान, द्रव्य विन मिले न आदर।
पुरुष विन कैसे शृंगार, मेघ विन जैसे दादुर॥
वैताल कहे विक्रम सुनो, बोल बोल बोली फिरे।
धिग् धिग् मनुष्य अवतार, सो मन मेल्यां अंत करे॥

विद्यादेवीसे प्रेमपूर्वक मन मीला लीया तो फिर अन्तर क्यों करना चाहिये।

बस, मैं इसी बातको चाह रहा हूं कि हमारे विद्यार्थी भाई एक दिलसे विद्याभ्यास कर हमारी समाज में उत्साही भाइयों में अपना नाम लिखावें, इतनाही कह मैं मेरे स्थानको स्वीकार करता हूँ अनुचितकी क्षमा प्रदान करावें।

अनोपचन्द तातेड.

—※◎※—

भाषण नम्बर ६

प्यारे सज्जनों ? मैं आज एक महात्माकी कृपारूप प्रसादी आपके करकमलों में रखनी चाहता हूं, आशा है कि आप इस प्रसादीका पान कर अपने जीवनको पवित्र बनावेंगे।

नीचाश्रयो न कर्तव्यः, कर्तव्यो महदाश्रयः।
अजासिंहमसादेन, आरूढा गज मस्तके ॥

नीच मनुष्यकी संगत कभी नहीं करना, उस नीच के आश्रय लेने से अपने अन्दर भी नीचता आ जाती है, दुनिया में इज्जत हलकी होती है, नीच संगतसे अच्छे मनुष्यों का वजन कम हो जाता है कि:—

संगत शोभा पाइये, सुनों सज्जनों वेन।
वही काजल ठीकरी, वही काजल नयन ॥

देखिये ? एक हंसने कागमे प्रीति करी थी हंसने काग को अपने समुद्रपर केइ दफे ले जाके आनन्द की लेहरो दीखाइ थी एक दिन कागने भी हंस को अपने वनमें ले जा के एक झाडपर बेठाया उस झाड नीचे एक राजा निंद्रामे सुता था कागने उस राजा के मुंह पर वींट कर आकाश में उड गया राजा कोपित हो हाथ में बाण ले के झाड उपर फेंका और वह बान सिधा हंस के लगा मरता हुवा हंस बोला की:—

" नाहं काको महाराज हंसोऽहं विमले जले।
नीच संग प्रसंगेन मृत्युरेव न संशयः ॥ ६ ॥ "

है महाराज में काक नहीं किन्तु निर्मल जल यानि समुद्र का रहनेवाला मुक्ताफल के खानेवाला हंस हुं परन्तु नीच काक की संगत करने से मेरा मृत्यु होता है परन्तु हे राजन् तुं एसा न समजे की हंस एसे कुपात्र होते है. यह चेष्टा काग जैसे विकल पशुओंकी ही है इतना कह हँस प्राणमुक्त हो गया. इस वास्ते अच्छे सुशिल आदमियों का परिचय करना चाहिए, उन्हों के आश्रय में रहना चाहिए बड़े इज्जतदारों की संगत करनी चाहिए, देखिए एक बकरी रस्ते चल रही थी, उस समय एक हस्ति आ रहा था, उसका विचार बकरी को भक्षण करने का था। हस्तिने पूछा कि बकरी ! तू किधर जाती है बकरीने कहा क्या तुम्हें दीसता नहीं है ? यह सिंह के पञ्जे मंडे हुवे है मैं उसी के पास जाती हूँ हस्ति सुन के घवडाने लगा और बोला कि मेरे मस्तकपर बैठ जा, मैं तुझे तेरे स्थान पहुँचा दूँ परन्तु वहां जा के सिंह के आगे मेरी कोशीस करना, प्यारे सज्जनों ? क्या यह बडों के आश्रय का प्रभाव नहीं है कि बकरी का महत्व बढ गया, यह पहली प्रसादी क्या सवा लाख रुपये की नहीं है ?

पुस्तकं वनिता वित्तं, पर हस्तं गतं गतम् ।
यदि चेत्पुनरायाति, नष्टं भ्रष्टं च खंडितम् ॥

एक पुस्तक दूसरी औरत तीसरा धन यह परके हाथ में देने से गई समझनी. अगर कभी वापिस आवे तौभी नष्ट भ्रष्ट और खगड खगड हुवे आते हैं वास्ते उक्त तीनों पदार्थों किसी परके हाथ में नहीं देना चाहिए कहा है कि—

विद्या वनिता नृप लता, यह नहीं जाय गीणन्त ।
जो जहांपे निशि दिन रहे, तांसे ही लपटंत ॥

विद्या अपने जिये उच नीच बाल युवक वृद्ध स्त्रि पुरुष स्वरूप कुरूप रोगी निरोगी नहीं गीनती है। जो कोइ सत्य दिलसे प्रेम कर विद्या को रखनी चाहे तो विद्या उनके प्राणों के माफीक सदैव पासमें ही रहती है इस माफीक ही वनिता (औरत) समझ लो. नृप यानि राजा भी जिस के पास अधिक रहता है उसी का बन जाता है और लता भी जिस वृक्ष के पास रहती है वह उसी के साथ लपट जाती है अगर ईन चारों यानि विद्या औरत राजा और लता ईन को चिरकाल तक दूर रख छोडी तो वह दूसरों से प्रेम कर ले गा वास्ते इन चारों को सदैव पास में ही रखना जरूरी है। यह हित शिक्षा रूप दूसरी प्रमादी क्या सवालख की नहीं है ?

प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः, परोक्षे मित्र बान्धवाः ।
कार्यान्ते दासी भृत्याश्च, पुत्रो नैव मृताः स्त्रियाः ॥

धर्मगुरु या विद्यागुरु की स्तुति प्रत्यक्ष यानि उन्हों की सेवा में रहे हुवे ही करना, मित्र और बन्धव की स्तुति परोक्ष यानि [illegible] गेरहाजरी में करनी और दास दासी की स्तुति कार्यके करनी स्त्री यानि औरत के गुणों की स्तुति मरने के बाद करनी पुत्र की स्तुति कभी नहीं करनी चाहिए कारण की—

(१) गुरु की स्तुति करने से साक्षा प्रसन्न चित्त रहता उन्हो को अभिमान कभी नहीं आता है [illegible] स्वकी प्राप्ती हो सक्ती है।

(२) मित्र या बन्धव की स्तुति पीछाडी करने से हमेशां प्रेम-प्रीति वढती रहे ।

(३) दासदासी की स्तुति कार्य्यके अन्तमें करनी कि उनका थाक श्रम उतर जाय और दूसरी वार काम उत्साहसे करें । दील वढता रहे ।

(४) पुत्र की स्तुति कभी नहीं करनी कारण उससे विनय भक्ति वनी रहे ।

(५) पांचवी स्त्री की स्तुति मरनेके वाद करनी कि दूसरी औरतें सुनके उन गुणोंको धारण कर अपना गृह जीवन पवित्र करे कहा है कि:—

गुनग्राही वनीये सदा लागत नहीं कछु मोल ।
अवगुन जोवे आपका पामे गुन अनतोल ॥
पामे गुन अनतोल जगतमें लोक सरावे ।
परभव सुर अवतार आखर वह शिवपद पावे ॥
कहत कवि करजोड़ ज्ञानकी वातें सुनीये ।
लगत नहीं कछु मोल गुनके ग्राहक वनीये ॥ २ ॥

क्या यह तीसरी प्रसादी सवा लक्ष की नहीं है ?

विरला जानन्ति गुणान्विरला कुर्वन्ति निर्धन स्नेहम् ।
विरला रणेपु धीराः पर दुःखे नापि दुःखिता विरला ॥

गुणी जनोंके गुणको जाननेवाला जगतमें विरला ही मिलेगा, निर्धनोंसे स्नेह करनेवाले भूमी पर स्वल्प ही दीखते हैं

विद्या वनिता नृप लता, यह नहीं जाय गीणन्त।
जो जहांपे निशि दिन रहे, तांसे ही लपटंत ॥

विद्या अपने लिये उच्च नीच बाल युवक वृद्ध कि पुरुष स्वरूप कुरूप रोगी निरोगी नहीं गीनती है। जो कोइ सच्चा दिलसे प्रेम कर विद्या को रखनी चाहे तो विद्या उनके प्राणों के माफीक सदैव पासमें ही रहती है इस माफीक ही वनिता (औरत) समझ लो. नृप यानि राजा भी जिस के पास अधिक रहता है उसी का बन जाता है और लता भी जिस वृक्ष के पास रहती है वह उसी के साथ लपट जाती है अगर ईन चारों यानि विद्या औरत राजा और लता ईन को चिरकाल तक दूर रख छोडी तो वह दूसरों से प्रेम कर ले गा वास्ते इन च्यारों को सदैव पास में ही रखना जरूरी है। यह हित शिक्षा रूप दूसरी प्रसादी क्या सवालक्ष की नहीं हैं ?

प्रत्यक्ष गुरवः स्तुत्याः, परोक्षे मित्र बान्धवाः।
कार्यान्ते दासी भृत्याश्च, पुत्रो नैव मृताः स्त्रियाः ॥

धर्मगुरु या विद्यागुरु की स्तुति प्रत्यक्ष यानि उन्हों की में रहे हुवे ही करना, मित्र और बन्धव की स्तुति परोक्ष यानि गेरहाजरी में करनी और दास दासी की स्तुति कार्य्यंके करनी स्त्री यानि औरत के गुणों की स्तुति मरने के बाद करनी पुत्र की स्तुति कभी नहीं करनी चाहिए कारण की—

(१) गुरु की स्तुति करने से सादा प्रसन्न चित्त रहता है उन्हो को अभिमान कभी नहीं आता है। कृतार्थ बन जाता है गुरु-स्वकी प्राप्ती हो सक्ती है।

(२) मित्र या बन्धव की स्तुति पीछाडी करने से हमेशां प्रेम-प्रीति वढती रहे ।

(३) दासदासी की स्तुति कार्य्यके अन्तमें करनी कि उनका थाक श्रम उतर जाय और दूसरी वार काम उत्साहसे करे । दील वढता रहे ।

(४) पुत्र की स्तुति कभी नहीं करनी कारण उससे विनय भक्ति वनी रहे ।

(५) पांचवी स्त्री की स्तुति मरनेके बाद करनी कि दूसरी औरतें सुनके उन गुणोंको धारण कर अपना गृह जीवन पवित्र करे कहा है कि:—

गुनग्राही वनीये सदा लागत नहीं कछु मोल ।
अवगुन जोवे आपका पामे गुन अनतोल ॥
पामे गुन अनतोल जगतमें लोक सरावे ।
परभव सुर अवतार आखर वह शिवपद पावे ॥
कहत कवि करजोड़ ज्ञानकी बातें सुनीये ।
लगत नहीं कछु मोल गुनके ग्राहक वनीये ॥ २ ॥

क्या यह तीसरी प्रसादी सवा लत्त की नही है ?

विरला जानन्ति गुणान्विरला कुर्वन्ति निर्धन स्नेहम् ।
विरला रणेषु धीराः पर दुःखे नापि दुःखिता विरला ॥

गुणी जनोंके गुणको जाननेवाला जगतमें विरला ही मिलेगा, निर्धनोंसे स्नेह करनेवाले भूमी पर स्वल्प ही दीखते हैं

संसार यानि टंटाफिसादमें धैर्य रखनेवाले विरले ही होते हैं पर दुखोंमें दुखी होनेवाले भी विरले ही पाये जाते हैं कहा है कि:—

वह विरला संसार, नेह निर्धनसे जोडे ।
वह विरला संसार, ज्ञानसे मोहको छोडे ॥
वह विरला संसार, आमद और खर्च संभारे ।
वह वीरला संसार, हाथ निर्बल पर न डारे ॥
वह विरला संसार, देखकर धरे अदिट्ठा ।
वह विरला संसार, वचनसे बोले मिट्ठा ॥
आपो मारे प्रभु भजे, तनमन तजे विकार ।
अवगुण उपर गुण करे, वह विरला संसार ॥

सज्जनों ! क्या यह चतुर्थ प्रसादी सवालक्ष मुद्रा की नहीं है ? अन्तमें हम यह कहना चाहते है कि अगर आप इन चारों प्रसादियोंके ग्राहक बनोंगे तो समय पाके में कभी आप की सेवामें फिर भी महात्मा की प्रसादी हाजर करूंगा ।

भंडारी चिम्मनमल.

भाषण नम्बर ७

श्रीमान् सभासदो !

श्री सर्वज्ञ ज्योतीरूपं, विश्वाधिशं देवेन्द्रम् ।
काम्याकारं लीलागारं साध्वाचारं श्री तारम् ॥

ज्ञानोद्धारं विद्यासारं कीर्त्तिस्फारं श्री कारम्।
गीर्वाणेर्वन्द्या सानन्दं भक्त्या वन्दे श्री पार्श्वम् ॥ १ ॥

प्यारे श्रोतागण ! आज हमारी श्रोसवाल भोपाल जाति की पतित दशा देख किन भाइयोंके कोमल हृदयमें दुःख रूपी अग्नि न भड़क उठी होगी, ऐसा बज्रसा निष्ठुर हृदय किसका होगा कि जिसके हृदयमें समाजका दुःख न होगा; हमारी पतित दशाका मुख्य कारण क्या है उसे प्रथम ढूंढना चाहिए, नीतिकारोंने क्या ही अच्छा कहा है कि,

पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना, तुण्डे तुण्डे सरस्वती ।
देशे देशे विभाषास्या—न्नाना रत्ना वसुन्धरा ॥

मगज मगजमें बुद्धि भिन्न भिन्न हुआ करती है मुख मुखमें सरस्वतीका निवास हुवा करता है देश देशकी भाषाये भिन्न भिन्न हुवा करती है किसी मनुष्यको अपनी बुद्धिका, अपने वचन पटुताका और अपनी सुन्दर भाषाका अभिमान न करना चाहिए क्यों कि इस पवित्र भूमि पर अनेक नररत्न निवास करते हैं मैं कोइ वक्ता नहीं हुं तथापि मनुष्य मात्र को बोलनेका हक है इस नियमानुसार मैं मेरी तुच्छ बुद्धिसे ही हमारी समाज पतनका अनेक कारणोंमेंसे आज एक कारण आप की सेवामें उपस्थित करता हूं कारण है ' फजूल खर्चा ' हमारे पूर्वजो—न मूंजी थे, न कृपण थे. न संकुचित हृदयवाले थे, न कभी योग्य खर्चमें पीछे हठनेवाले थे; किन्तु वे सादाई सरलाईसे ही अपना जीवन गुजारनेवाले थे जिसका आजकल कुछ कुछ नमूना सीवाणाची, साचोराई, थली और गोडवाड़में दिखाई देता है. हमारे और हमारे पूर्वजोंमें इतना ही अन्तर

है की वे लोक सादाइ सरलाइ और नम्रताइको पसंद करते थे. हम लोक टेडाइ अकडाइ बडाइको अच्छी समझते है। वे लोक रेजा खादी की पोषाकमें अपना गौरव मानते थे. हम लोक फेन्सी बडीयां बहुमूल्य पोषाकमें आनन्द मानते हैं। वह लोक सामान्यताले गुड की लापसी विशेषमें सकरका सिरामें अपना महत्व मानते थे, हम लोक चाहे हमारी हैसियत हो चाहे न हो करजा क्यों न हो घरवार क्यों न विकजावे परन्तु रुढीके गुलाम बन लड्डु जलेबी करनेमे ही इज्जत समजते है। वह लोक लग्न सादीमें चौरासी रूपैये और चुडा-की मर्यादा बान्ध रखी थी. परन्तु उनोंने कन्यविक्रय का नाम तकको नहीं सुना था। हम लोगोंको चौरासी तो कौनसी गीततीमें है हजारोंका धूआं तो सहजमें ही करना पडता है. केवल एक धनाढ्यों की बरी की सीलाइ देखी जावे तो पहलेके जमानेमे तीन चार आदमियों की सादियों हो जाती थी. फीर दूसरे खरचेका तो कहना ही क्या ? केइ निर्दय लोक अपनि अङ्गजावोंको लालचके मारे पशु की माफीक बेच देते है यह ताम उम्मर तक उन मातापिताओंकों दुराशीस दीया ही करती है। जब हमारे पूर्वजोंके अन्दर सादाइ थी तब उनके घरोंमे सोना चान्दी रत्न माणक मुक्ताफल आदि की कीतनी जामो थी. जबसे हमारे अन्दर फजूल खरचाके साथ अकडाइ टेडाइ अभिमानाइका संचार हुवा तबसे न जाने वह हमारी लक्ष्मी कहा पर चली गइ है हमारे खर-चाके सामने देखा जावे तो कीसी कार्योंमे मर्यादा न्यात् ही रही होगी. पहलेके जमानेमे इतना न्याति जातिका गौरव था की इस हैसियतवाला ही अमुक यह कार्य कर सके आज हमारे धनाढ्योंके देखादेख मध्य

कोटीके मनुष्य भी डुब मरनेका उपाय कर रहा है जिसके आमन्द और खर्च पर ध्यान दीया जाय तो एक कविने कहा है की

" देवालो काडे तीन जणा, हुन्डी आडत ओर सट्टागणा ॥
तुं क्यो काडे रे चोथा जाणा, मारे आवन्द थोडी ओर खरचा गणा ॥"

;जब हैसियतके सिवाय खर्च कीया जाता है उसे पक्का द्रव्य मारणे की इच्छा सदैव बनी रहती है विश्वासघात वह करता है स्वामिद्रोहीपणा उसे करना पडता है झूट कपट आदि अनेक आत्याचार फाजुल खर्चाके लिये ही करना पडता है.

अगर कोइ भाइ यह सवाल करेगा की पहले की निष्पत् आज इस वक्त हमारे पास सोना चान्दी जादा है धान भी जादा है हमारे लिये यह जमाना ठीक है तो हम उत्तरमें यह कहेंगे कि पूर्व जमानेमें पाट्टा पाट्टी खिडकनेवाले हजारों नहीं किन्तु लाखों में स्यात् ही मिलता था आज साले साल समाचार पत्रोंमें पुकार होती है कि इनने भाइयोंका काम फैल हुआ यानि काम कचा रहा चोपडा बंगल बाजारमें गये, कीसीने सामको दशहजार रुपया जमा कराया, सुबहमें साफ होके घर बेठे, क्या यह हमारी जाति को सरमाने वाली बातें नहीं है । प्यारे महरबानों ! आज सोना चान्दी धन बडा नहीं है पूर्वजोंकी स्थिति देखो तो आज तुच्छमात्रभी द्रव्य नहीं है जो कुछ है वह भी अधर्मसे पैदा किया अधर्ममेंही जाता है क्या पूर्वजों माफिक किसी भाईने पुन्यकार्य कर बतलाया है देखो हमारे पूर्वजों के बनाये हुवे क्रोडोंकी ज्यादातके तीर्थ–मन्दिर और संघसेवा समाजके लिये क्रोडका खरचा और आधूनिक हमारे फजूल खर्चे पर आप ध्यान देंगे तो आपको यह ही मालुम होगा की दुःख खर्चा करनेमें आगेवान धनाढ्य लोग है उन्होंके पिछाडी पिछाडी मध्यम कोटीके मनुष्यों भी डूब मरने

पाय करते हैं खाना पीना और उठानेके सिवाय क्या करते है ? एक लड़के
की सादी करते है तब 'वरी' में पांचसौ सातसौ रुपये तो केवल दर्जियों
को मजूरी के ही दे दीये जाते हैं वह वरीके कपड़े सालभरमें एकाद दिन
काम आते है कदाच् दंपति के अन्दरसे एक परलोक गमन करना है तब
उन कपडोंको देख देखकर छाती माथा कूटना पड़ता है इस माफिक कई
मृत्युओंके पीछाड़ी औसर मोसर में जिसमेंभी गामडे के लोग तो घर
बालके सीर्थ करनेमें तनिक भी पीछे नहीं हटते है । अब हमारे पोषाकी
खरचे की तरफ देखिये कि जो नौकरी करनेवाला भाई है उसके भी
सालभरमें ८०-१०० रुपयों के कपड़े तो तंग हाथवालों को भी चाहीये
जिन्हों के बक्समें देखा जावेतो इतने कपड़े जामा मिलेंगे कि वह पांच
दश वर्ष तक नये कपडे नहीं करावे तो भी चल सके यही हाल हमारी
बहीनोंका हो रहा है इस खर्चेके लिये हमे हमारा धर्म बेचना पड़ता है
विश्वासघात और चोरीयां करनी पड़ती है नमक हराम होना पड़ता है रात
दिन आर्त ध्यान कर शरीर कमजोर कर देते हैं आयुष्य कम हो जाता
है यौवन अवस्थामें परलोक गमन करना पड़ता है और इससे विधवाओं
की संख्या दिन प्रतिदिन बढ रही है आपसमें प्रेम स्नेह ऐक्यता का नाश
हो रहा है देव गुरु धर्म परसे श्रद्धा शिथील होती जा रही है मनुष्योंकी
संख्या बहुत कम हो रही है यही हाल यही हमारी पतित दशाका एक
कारण है क्या अब भी हमारे धनाढ्य और समाज अग्रेसरों के अज्ञान
का पर्दा दूर न होगा ? हम एसे शब्द कहने नहीं चाहाते पर आन्तरिक
दुःख के मारे विगर मनसा भी निकल जाते है खेर आप नाराज होकर
भी पहला धनाढ्य ईस फाजुल खरचेको बन्ध कर देंगे तो हम आपका

परमोपकार समझेंगे। सज्जनों! आजके विद्वानलोक अपने लिये क्या फरमाते हैं उसको भी ध्यान पूर्वक सुनिये ॥

हमसे दूर रहो तुम यार, नकली जैन कहलाने वाले ॥ हमसे० टेर ॥
हम ओसवाल भोपाल, कहां गया जाति न्यातिका ख्याल, ।
अज्ञानने बना दीया बेहाल, जातिका गौरव गमानेवाले. ।हमसे० टेर ॥
कहां गया सदाचार और प्रेम, कहां गया धर्मव्रत और नेम, ।
कहां गया नीति कुशल और क्षेम, शान्तिका भंग करानेवाले, ह० ॥२॥
करते बाल लग्न वैपार, दमडे लेते अपरम्पार, ।
देते बुड्ढे जनकी लार—विधवा वेश बढानेवाले, हमसे० ॥३॥
मृत्युके जीमनहार, रुपये खरचे केई हजार, ।
फीरते लेणायत जब लार, जहां तहां मुंह छुपानेवाले, हमसे० ॥४॥
कपडे मलमल रेशम चावे, घृणा चरबीसे नहीं आवे, ।
मौरस खांड दवाइ खावे, दयाकी जड उठाने वाले हमसे० ॥५॥
कहां है बचा बचीकों ज्ञान, सब मिल बन बैठे अज्ञान, ।
कहां गया जाति नाति अभिमान, धर्म आचार डुबानेवाले. हमसे० ॥६॥
अन्य जाति करे उद्धार, चलावे पाठशाला अखबार, ।
बढते ज्ञान उद्योग प्रचार तुम घर फुट बढानेवाले. हमसे० ॥७॥
अरजी पे करो विचार, समाजके नेता लेवो धार, ।
पलकमें नईया करदे पार, ज्ञानको सुन्दर बनानेवाले हमसे० ॥८॥

वीर पुत्रो! इस खरचाके मारे तंग होकर नतो हम धर्मकार्यमें पैसा खरच सकते हैं न विद्या दांनमें पैसा दे सके इतनाहीं नहीं बलके न हमारे बाल बच्चे भाइयोंको पैसा खरच कर सके ।

कीतनेक भाइ उपदेश देनेमें पटु होते है किन्तु पापर काम पडते है ग्र बोल उठते है की क्या करे हमारा इरादा नहीं था की, असंख्य जीवोंके बलीदानसे रेस्मके कपडे करावे; परन्तु घरमें औरतें नहीं मानती है इस वास्ते अपरन् जाना पडता है इन उत्साही महाशयजी को हम क्या कह सके ? परन्तु दुनिया कहती है कि अरे पाडी मान्यलेनेवाले औरतों के हाथ बीयों ! जरा शरमावो ! क्या तुमारा कहना तुमारी औरतें नहीं मानती है तो फिर पाटीआन्ध पंचायतिमें आगे सुंदर खीरा वास्ते जा बैठते हो। क्या आपका सिंहनाद आपसमें कलेश करानेके लियेही है अगर आप समाज सुधारके लिये कम्मर कसी हो तो पहला अपने तनपर खरचा कम करो फिर अपने घरका खरचा कम करो, बाद अपने ग्रामका और बाद देशका कार्य करो तबही दुनियाँ आपपर विश्वास रखेगी आपका कहना मानेगी ।

अन्तमें हमारी नम्रतापूर्वक यह ही निवेदन है कि जहांतक बने वहां तक फाजुल खरचाको कमकर हम बालकों पर दयाभाव लाके एसी सादाइ सीखावों और पहलेसेही हमारा संस्कार एसा डाल दो की हम उस वस्तुका नामनकभी न जाने की यह हमारे लिये हानिकारक हो यह तो हमने हमारी पतितदशाका एक कारण आपकी सेवामें संक्षेपसे निवेदन किया है कभी समय पाके एसे दूसरे भी कारण है वहभी पेस करूंगा। अलम । इतनाही कह मैं मेरे स्थानको स्वीकार करता हूं । अनुचितकी क्षमाप्रदान करावे ।

विद्यार्थी सुत्ता दुलीचंद वैद.

भाषण नम्बर ८.

भगवान जैन ! समाजने ही पाप क्या ऐसे किये,
सब जातियां आगे बढी उत्साह साहसके लिये,
पर यह समाज सदैव ही पीछे स्वपद रखता रहा,
जो ह्रास अरु विकरालका ही नाश फल चखता रहा।

'शिक्षा और हम'

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि वही देश वा समाज उन्नत ये कहलायेगा कि जिसके निवासी सुशिक्षित हों, शिक्षा ही एक ऐसी वस्तु है कि जिसको प्राप्त कर मनुष्य उच्च कोटीका सज्जन बन सकता है सर्वत्र अपनी जयका डङ्का बजा सकता है इस लोक और परलोक दोनोंमें सुख पा सकता है शिक्षा एक जगमगाते हुए सूर्य्यके समान है उसका गुण किसी कोनेमें छिपा हुआ नहीं है अतः उसका अधिक वर्णन करना व्यर्थ है हमारे पूर्वाचार्योंने जो हमको मोक्षका रास्ता बतलाया है उसमें भी सबसे प्रथम उन्होंने शिक्षाकी आवश्यकता बतलायी है हमारा धर्मशास्त्र पुकार कर कह रहा है कि बिना ज्ञान प्राप्त किये क्रिया फलीभूत नहीं हो सकती। ज्ञान कब प्राप्त हो सकता है यह जानना कठिन नहीं है, प्रत्येक विषयका उदाहरण सामने रख लीजिये आपको किसी भी विषयका ज्ञान प्राप्त करनेमें सबसे प्रथम

शिक्षाकी ही आवश्यकता होगी, कहनेका तात्पर्य यह है कि विना शिक्षा के ज्ञान प्राप्त होना असंभव है जिस शिक्षाका गुण आज समस्त संसार गा रहा है उस शिक्षासे हमारी ओसवाल समाजका कितना और कैसा सम्बन्ध है यह हमें पहले वर्णन करना चाहिए।

शिक्षासे हमारा कितना और कैसा सम्बन्ध है ? इस प्रश्नका उत्तर देते हमें लज्जा आती है कारण हमारी वर्तमान शिक्षा स्पष्ट बतला रही है यद्यपि हमारी जाति अब भी पूर्वजोंके प्रतापसे उच्च जातियोंमें गिनी जा रही है दूर तक हम विख्यात है जब बाहरमें तो हम महा पुरुष गिने जाय किन्तु घरमें पोल हो तब लज्जा आनी स्वाभाविक है हमारी शिक्षाका खजाना दुर्दैवने लूंट लिया विद्यादेवी हमारेसे अप्रसन्न होकर दूर चल बसी, हमारी समाज शिक्षित कहलानेका दम नही भर सकती।

दूसरे सभ्य सज्जनोमें यह प्रथा है कि जब बालक पांच वर्षका हुआ कि चट उसकों विद्याध्ययन करना आरम्भ करा दिया जाता है किन्तु हमारी समाजमें यह प्रथा तेजीसे भाग रही है हमारी समाजके बालकोंको ६—८ वर्ष तककी वय तकतो कुछ कार्य्य नहीं करना पड़ता केवल खेल कूदमें ही वे मस्त रहते है वह खेल कूद भी ऐसा नहीं कि जिससे कुछ स्वास्थ्य लाभ हो बल्कि उनका खेल इस ढंगका होता है कि जिससे स्वास्थ्यकी हानिके अतिरिक्त लाभ स्वप्नमें भी नहीं हो सकता, उनके सङ्गी ऐसे दुष्ट बालक होते है कि जिनके मुंहसे अश्लील शब्दोंका खजाना हर समय निकलता रहता है। सङ्गका असर बड़े २ महा पुरुषोंपर हो जाता है। फिर वे तो

विचारे बालक कि जिनकी बुद्धि बिलकुल कच्ची होती है भला उनपर सोचनका असर क्यों न हो ? कहनेका तात्पर्य यह है कि हमारी समाज के अधिकांश बालकोंको सबसे प्रथम अश्लील शब्दबकनेकी शिक्षा मिलती है यह शिक्षा न केवल उन्हें अपने सखाओंसे ही मिलती है वरन् माता पितादि आत्मीय जनोंसे मिलती है। पाठक यह सुनकर आश्चर्य करेंगे कि यह ऊट पटांगकी बातें कहांसे लिख मारी ! हम इसके सम्बन्धमें केवल इतना ही कह देना उचित समझते हैं कि हमारी समाजके प्रत्येक घरमें अश्लील गीत गाये जाते हैं क्या उनसे बालकों को अश्लील बातोंकी शिक्षा न मिलेगी। यह सब हमारी समाजमें स्त्रीशिक्षाका ही अभाव होनेसे कुप्रथा है। ज्यों ज्यों बालक ७–८ वर्षका होता है तब उसके माता पिताको उसे पढाना सूजता है अब थोडासा हाल उन पाठशालाओंका भी सुन लीजिये। १००–१५० विद्यार्थीयोंको पढानेके लिये एक गुरुजी महाराज हैं जिनको (वाणिक) गणितके सिवाय कुछ भी नहीं आता। लिपी भी वे ऐसी लिखते है कि 'बाबाजी अजमेर गये' को 'बाबाजी आज मर गये' पढा जाता है इसी तरह २–३ वर्ष तक यह बालक उन गुरुजीके पास पढ लिया तो वह बालक योग्य समझ लिया जाता है और फिर उसके माता पिता १०–१२ वर्षकी अवस्थामें विवाह कर उसका विद्याध्ययन करना बन्द करा देते हैं। आप विचार कर सकते हैं कि वह बालक कि जीसने दो या तीन वर्ष ही विद्याभ्यास किया है और वह भी केवल गणितका, क्या वह बालक जातिसेवाके पवित्र महत्वको समझ सकता है ? [illegible] विचार करेंगे और जातिका उत्थान कर[illegible]

कैसे समर्थ हो सक्ता है ? हमारी समाजमें ७५ फी=सदी बालकोंके इस तरह विद्याध्ययन पर १२ वर्षकी ही अवस्थामें ताला ठुक जाता है। १५—१६ तथा २० वर्षकी उम्र तक तो बहुत कम बालक पढते हैं ऐसे तो हमारी समाजमें फी=सदी एक दो ही बालक स्यात् होगा कि जिसके जीवनका बहुतसा हिस्सा विद्याध्ययनमें ही बीतता हो। कदाच फी=सदी एकाद बालक अधिक काल तक पढता भी हो परन्तु वह भी ऐसी शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकता कि जिससे वह अपने समाजोद्धार का कार्य कर सके। वह अपने जीवनका एक बहुत बडा भाग युनिवर्सिटियोंकी डिग्री प्राप्त करनेके लिये ही बीता देता है ऐसे शिक्षित कहलाने वाले युवक भी हमारी समाजमें बहुत हैं; किन्तु जब कि उनके हृदयमें जातिके प्रति सेवाके उच्च भाव नहीं हैं तब उनको होना या न होना बराबर है। हमारे इन शिक्षित कहलाने वालोंमेसे अधिकांश तो ऐसे महा पुरुष है कि जो फेशनके पूरे गुलाम बने हुए हैं और कई एसे भी हैं जो अपनी टेक जमानेके लिये समाज सेवकोंके बाधक बने हुए हैं। कीचडमें सदा मच्छर ही मच्छर पैदा होते है पर कभी कभी कमल भी विकसित हो जाते हैं इस युक्तिके अनुसार हमारी समाजमें शिक्षितोंमेंसे कई ऐसे होनहार माताओंके सपूत हैं कि जो समाजका सूर्य्य पुनः चमकानेकी चिन्तामें पडे हुए है किन्तु ऐसे थोडे हैं इसी लिये समाजोद्धारमें देरी हो रही है।

भ्राताओं ? अपनी समाजमें शिक्षाकी कैसी दशा है उसका तो मैं थोडासा वर्णन कर ही चुका हूं। अब जरा शिक्षालयोंकी दशा भी देख लीजिये जिस समाजमें शिक्षाकी यह दशा है उस समाजमें जा-

नीय एवं पूरे शिक्षालयोंकी आशा करना तो दुराशा मात्र है बड़े शहरों को छोड़ दीजिये और गामडों की तरफ देखिये अन्य समाजकी देखादेखी हमारी जातिवालोंने भी थोड़ेसे स्थानों पर शिक्षालय स्थापित कर रखे हैं किन्तु वे अंगुलियोंपर गिने जाने लायक हैं एसा कोई विद्यालय नहीं है जो प्रसिद्ध हो अथवा उनमेंसे निकले हुए विविद्यार्थीयोंसे यह आशा की जा सके कि ये जातीयताका झगडा फहरावेंगे । प्रथम तो इन शिक्षालयोंमें क्रमशः शिक्षा नहीं दी जाती है और केइयों में आर्थिक सहायताकी जरूरत रहती है और कइयोंमें कार्य्य करनेवालों की आवश्यकता रहती है इस तरह इस समाजमें शिक्षालयों की दुर्दशा हो रही है शिक्षाके अभावसे अनेक तीर्थों की अनहद आशातना हो रही हैं और देशका भी पतन हो रहा है धनाढ्य वीरोंको अब अपने धनका शिक्षा के लिये सदुपयोग करना चाहिए, मुख्य तीर्थस्थानों पर बोर्डिंग और ग्रामों ग्राममें विद्यालय स्थापित करने चाहिए जिससे इस समाजका पुनः सूर्य्य उदय हो अन्तमें आपको इस जैन श्वे० व० पाठशाला (नागोर) का कुच्छ परिचय कराके अपना भाषण समाप्त करता हूं अन्य देशोंकी देखा देख यहां के जैनी भ्राताओंने भी इस पाठशालाकी शुभ स्थापना की है जिसको हाल करीब डेढ वर्ष हुआ है जिसमें छः मास तो अध्यापकों के न होनेसे और प्रबन्ध करनेमें बीत गये थे एक साल भरमें जो कुछ विद्यार्थीयोंको शिक्षा मीली है वह आप के सन्मुख है धार्मीक में पंचप्रतिक्रमण तक और अंग्रेजीमें चार क्लासकी पढाइ कइ लडके कर चुके है ०, [illegible] हिसाबादि गणितका अभ्यास कीया है इस

पाठशालामें अभी कइ बातों की आवश्यक्ता है उन्हे यहां आशा पूर्ण कर ही रहे हैं तथापि मैं यहांके जैन समुदायसे और अन्य विद्याप्रेमी भ्राताओंसे निवेदन करता हूं कि इस संस्था की या अन्य भगुतसी संस्थाओंकी एसी नींव डालो की जिससे समाजोद्धार हो क्यों कि अपनी समाजमें ऐसी बहुत ही संस्थाएँ बाल्यावस्थामें ही निर्वाण हो चुकी है कारण हमारा अल्प कालिक उत्साह, द्वेष प्रवेश अन्तर जातीय झगडे और ऐसी संस्थाओं पर लक्ष्मी देवीका कोप। किमधिकम— अनुचितकी क्षमा प्रदान करावे.

उमरावमल लोढा.

(हेडमास्टर) ता. ६-१-१९२५.

भाषण नम्बर ६

प्यारे दानवीरों ! आप श्रीमानोंकी उपस्थिति देख मेरा हृदय हर्ष के मारा फुल उठा है उम्मेदके साथ फूटेतुके दो शब्द आप साहिबोंकी सेवामें निवेदन करना चाहता हूं आशा है की आप अपनी उदारताके साथ अवश्य श्रवण करेंगे।

ॐकार विन्दु संयुक्तं। नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव। ॐकाराय नमोनमः॥ २॥

प्यारे सज्जनों ! दानवीरों की संतान भी दानवीर हुवा करती है इसमे कोइ आश्चर्य की बात नही है हमारे पूर्वजोंने न्यायोपार्जित

असंख्य द्रव्य शुभ क्षेत्र में खरच कर अपना नामको भूमण्डल में अमर कर गये थे. आज उन पूर्वजोंकी संतान भी द्रव्य खरच करनेमें कीसी भी समाजसे पीछे नहीं है बलके दो कदम आगे ही वढी हुइ है।

हमारे और हमारे पूर्वजों में इतना ही तफावत है की हमारे पूर्वजों जैसे जीस शुभक्षेत्रमें अधिक जरूरत होती थी उसपर ज्यादा लक्ष देते थे आज हम गाडरीक प्रवाहकी माफीक मान ईर्षाके मारे एक दुसरोंके देखादेखी चंढवढके खरच करनेको तैयार हो जाते है. जहां एक पैसाकी भी आवश्यक्ता नहीं है वहां हजारों लाखों रूपैये खरचने को हम तैयार हो जाते है जहां जरूरत होती है वहां पर एक पैसा भी हमारेसे खरचा नही जाता है इस वास्ते ही हम अज्ञान कहलाते है और दुनियोंमें हाँसीके पात्र वन रहे है यह ही हमारा अधःपतनका खास कारण है।

(१) जैसे जिन भाइयोंके बालबच्चे अज्ञानके अन्दर सड रहे है उनकी भविष्यमें वडी भारी दुर्दशा होगी। उनके लीये पांच रूपैये खरचना भी शेठजीके जी पर नहीं आता है और दो घडीकी खोटी 'वाह वाह' के लिये लग्न सादिमें आवश्यक्ता के सिवाय हैसियतके सिवाय दूसरोंकी देखादेखी सैंकडो हजारो रूपैयों का बलीदान कर देते है.

(२) जीते हुवे माता पिताओंकी सार संभाल तक भी नही लेते हैं और मृत्यु के बाद वडेही शूरवीर वन सैंकडो हजारों रूपैये खरचनेमे तनक भी पीच्छे नहीं हटते है चाहे सिरपर करजा क्यों न

हो जाय. माल मकांनात क्यों नहीं विकजाय ! अपनी संतान दुःखी क्यो न हो जाय; परन्तु रूढीके गुलाम वन उस , समय तो मान तक भूल जाते हैं.

(३) लेन देन जगह जमीन या द्वेष इर्षा के मारे कोर्टोंमे घर के घर फूंक देते है अगर कोइ अच्छे कार्यों के अन्दर पांच रूपैये भी देना पडे तो शेठजी हाथ तंग कर लेते है और वकील वालीष्टरों के लिये हजारो रूपैये बरवाद कर देते हैं.

(४) औरतो या लडकों के फेन्सी पोषांकों के लिये हजारों रूपैये बरवाद कर देते है अगर कोइ न्यातिभाइ आ गया हो तो एक दूसराका वाना ले लुप्त हो जाते है.

यह प्रवृति हमारे पूर्वजोंमें बिलकुल नहीं थी उनोंका द्रव्यं तो देव गुरु और धर्म की भक्तिों, समाज सेवामें, दीनोंद्धारमें देशोद्धारमें उज्वल वमानासे लगता था.

दानवीरों ! आपकी उदारता के लिये तो में बहुत प्रसन्न चित्त हूं साथ में यह भी तो निवेदन है की जीस क्षेत्र में अधिक जरूरत हो उसमें सहायता करना अधिक लाभका कारण होता है आज हमारी गिरी हुइ समाज में तन मन और धन तीनों की आवश्यक्ता दीखाइ दे रही है तन मन की सहायता मिलनेपर भी धन विगर काम रूक जाता है चाहे कीतना ही लिखा पढा हो चाहे तन से कीतनी ही मदद करने वाला क्यों नहीं; परन्तु धनका काम तो धन ही से होता है कहा है की—

विद्या वृद्धास्तपो वृद्धा । ये च वृद्धा बहुश्रुताः ।
सर्वे ते धन वृद्धस्य । द्वारि तिष्ठन्ति किङ्कराः ॥ १ ॥

चाहे विद्यावृद्ध यानि कीतना ही लिखा पढा क्यों न हो, चाहे तपश्चर्या करने में वृद्ध—शूरवीर हो चाहे बहु श्रुति हो यानि अकल या वय में वृद्ध हो परन्तु ये सब धनवान के द्वारपर किंकर बन कर रहा करते हैं। अगर समाज कार्यों में भी धनवान् अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग न करेगा तो कहा है कि:—

मागण गया सो मर गया। मरे सो मांगण जाय।
सब से पहला वह मरा। सो होतो ही नट जाय ॥ २ ॥

यह बात सत्य है कि पूर्व जमाना में मांगना मरण । तुल्य ही समझा जाता था; परन्तु आज सुधरा हुवा जमाना में परोपकार के लिये राजा महाराजा और बड़े बड़े इज्जतदार विद्वान भी मांग के द्रव्य एकत्र कर देश का भला करने में अपना गौरव समजते हैं वह लोग कहते हैं कि—

मर जाउं मांगुं नहीं। अपने तनके काज।
परोपकार के कारणे। न आवे मागत लाज ॥ १ ॥

बहुतसे लोक एसे भी देखने में आते है की लक्ष्मी प्राप्त होने पर भी वह परमार्थ के कार्य में मख्खीचूस बन जाते है इसी वास्ते एक कविने लक्ष्मी को उपालम्भ दीया है।

लक्ष्मी लक्षण हीनेषु। कुलहीने सरस्वती।
कुपात्रे रमते नारी। गिरौ वर्षति माधवः ॥ २ ॥

हिताहित न जानने वाले अर्थात् लक्षणहीनोंकों लक्ष्मी प्रसन्न करती है उन लोकों को इतना ही ख्याल नहीं है की यह लक्ष्मी कीतना रोज की है और कीस पुन्य से मीली है और भविष्य में विगर पुन्य मेरे पास कैसे ठेरें गी एसा विचार न करनेवाले को लक्षण हीन कहते है । कुल हीनों से सरस्वती राजी है कुलटा औरतें खानदानी कुलको छोड कुपात्रों के साथ निवास करती है। सम्यभूमि को छोड इन्द्र पर्वतोंपर अधिक वर्षाद वर्षाया करता है यह एक कलिकाल का ही महात्म्य है एक कविने कहा है-की—

भलो जहां भरतार । तांह घर नारी नखरी ।
पति नहीं प्रविण । जहां चर नारी सखरी ॥
जहां घर बहुलो चित्त । दत्त देणी नहीं आवे ।
जहां घर नहीं है वित्त । दान देने उमावे ॥
श्रोता तो सुखीया नहीं । पण्डित नहीं प्रविणता ।
देख कलि का स्वरूप । राख एक सत्य से लिनता ॥१॥

अगर नीतिकारों के वचन पर ध्यान न दें के । कोइ भाइ मुंजी धन अपने द्रव्य परोपकार में न लगा के प्राया से प्यारा कर रखेगा तो उन धन का क्या होगा उस के लिये एक चतुर कविने क्या फरमाया है ।

न देवाय न धर्माय । न बन्धुभ्यो न चार्थिने ।
दुर्जनै नार्जितं द्रव्यं । भुज्यते राजतस्करैः ॥ १ ॥

धनाढय लोक आपना द्रव्य न तो देव की भक्ति में लगाते

है न धर्म कार्यों में खरचते है न अपना जाति भाईयों के रक्षण में न देश भाईयों के लीये न ज्ञानदान में लगाते है उस द्रव्य की आखिर वही दशा होगा जो की राजदंड में लेगा या चौर चोरी में चुरा लेगा या अन्य प्रकार से स्वयं नष्ट हो जायगा।

सज्जनों! मनुष्यों की तृष्णा अपरम्पार हुवा करनी है जैसे लाभ होता है वैसे लोभ भी बढता जाता है परन्तु अन्त समय उस मुंजी की आशाएं कैसी निराश होती है इसपर भी एक कविने ठीक कहा है की एक मुंजी सरदार अन्त समय लक्ष्मी को कह रहा है की हे लक्ष्मी!

लक्ष्मी तोरे काज ठग्या बहु सज्जन प्यारे।
लक्ष्मी तोरे काज धरती पें कीये वहुत पसारे।
लक्ष्मी तोरे काज हिताहित नहीं विचारे।
लक्ष्मी तोरे काज धर्म कर्म सब दूरे डारे॥ १॥
सुख तरसा मेने सही। ले नाकी धरती धमरा।
मुंझी कहे लक्ष्मी सुनो। उठ चलो मेरी गमन॥ २॥

इस मुंझी के। वचनोंको श्रवण कर लक्ष्मीने जवाबदीया कि अरे पुन्य हीन अधमनर तेंने कोनसा सुकृत कीया की मैं तेरी साथ चलुं जो चलनेवाले मेरे चार पैर थे उसे तो तें ने काटही डाला जैसे—

प्रथम चरण मेरा यह हरप संतन सुख डारे।
द्वितीय चरण मेरा यह जीवों का प्राण उगारे।
तृतीय चरण मेरा यह विद्या पढे और पढावे।
चतुर्थ चरण मेरा यह शासन के काज सुधारे॥ १॥

यह चारों चरण काट के । लेनाकी धरती धमण ।
सिर पीट मर जाय मुंजी । नहि चलुं तेरी गमन ॥ २ ॥

आखिरमें लक्ष्मी रही पुन्यवानोंके घर और मुंजी मर विया-जागका बैल हुवा. प्यारे पुंजीपतियों ! आपकी लक्ष्मी को विद्याभ्या-समें या साधर्मी भाईयों की सहायता में और शुभ क्षेत्रमें लगाओ ताके इस भव में आपका अमर नाम होगा और परलोक में अमर पद प्राप्त होगा. यह मत समझो की धर्मकार्य पुन्यकार्य में लगाने से लक्ष्मी कम हो जायगा देखीये आपके सज्जन एक नीतिकारोंने क्याही सुन्दर फरमाया है.

व्याजे द्विगुणा स्यात् । व्यापारे चैव चतुर्गुणाः ।
क्षेत्र शतगुणा मोक्ता । पात्रेऽनंत गुणास्तथा॥ २ ॥

व्यजमें रुपैये स्यात् दुगुणे हो जाते हो व्यापार में अगर चोगुणा हो जाते हो, कीसानो खेतमें कदाच धान सो गुना पैदा कर लेता हो और आज के सटोडीये लोक कदाच एक रूपैये का दो चारसो या हजार रूपैयेभी करलेते हो परन्तु शुभक्षेत्र में द्रव्य लगाने में अच्छी भावना रखनेवालों को तो शास्त्रकारोंने अनन्तगुणा पुन्य बतलाया है और आप क्या चाहते हो.

अन्तमें मेरा यह निवेदन है कि हे दानवीरों ! आपको पूर्व पु-न्योदयसे लक्ष्मी प्राप्त हुइ है तो आप अपनी शक्ति के माफीक सद्-उपयोग करे ताके भविष्यमें भी लक्ष्मी आप से दुर न होगी और आपके कारण से आपके जाति भाइ देश भाइयों का भला होगा उन-

को आप द्रव्य सहायता दे के विद्याभ्यास करावेंगे या अपने धर्म में स्थिर रखेगा तो वह तांम उम्मर तक आपका उपकार नही भुलेगा वास्ते मेरा पुनः पुनः निवेदन है की मीली हुई लक्ष्मी जबतक आपके स्वाधिन है तबतक आप लाभ ले ले। कहा है की "पुन्य छतों पुन्य होत है दीपक दीपक जोत" अलम् इतनाही कह मैं मेरे स्थानको स्वीकार करता हूं। अनुचितकी माफी बक्षीस करावे.

आपका
विद्यार्थी मोहनलाल-नागोर।

भाषण नम्बर १०

प्यारे आत्मबंधुओ !

आज चोतरफ से जोर शोर के साथ चीलाठे हो रही है भाषणों से अमर गर्जना कर रहा है अखबार देश के चारोतरफ फेल रहे है पुस्तकों से अलमारिये भर गइ है सेंकडो विद्यालयों मे हजारो लाखो विद्यार्थीयों अपनी उम्मर पढने मे बीता रहे है अनेकोंने परिक्षामें पास होकर सर्टिफिकेटो प्राप्त कर लीयें है हमारे देश में डिगरीयों प्राप्त करने वालों की भी संख्या कम नही है खद्दर विगेरे सादी पोषाको धारण कर खर्चको भी बहुत कम कर रहे है इतना होने पर भी आश्चर्य इस बात का है की हमारी उन्नति का चिन्ह क्यों नही दीखाइ देता है पूर्व जमानाकि कोरटो में एकाद ओफीसर भी मक्खीयों उडाते थे. आज

हजारो प्रोफेसर होने पर भी इन्साफ के लिये टेम नहीं मीलती है लाखो क्रोडो आदमि कोर्टों की यात्रा कर रहे है क्या हमारी विद्वता सबकी सब कोर्ट कचेरीयों में ही खतम हो जायगी. क्या ओलम इस लिये ही बढा है ? या कोइ मेरी मनी मे विभ्रमता है ? या ओलम के साथ कोई अनुपान की त्रुटी है ?

सज्जनो ! ओलम विगर उन्नति नहीं है इसको तो आज जमीन से आसमान तक दुनियो एकही अवाज से स्वीकार करती है पर ओलम का अनुपान है आपसका प्रेम–स्नेह–ऐक्यता. आज हमारे अन्दर ओलमका अनुपान प्रेम–स्नेह–ऐक्यता–संप–मेल–मीलाप न होनेसे ओलम का दुरुपयोग हो रहा है. जैसे अनुकुल अनुपान विगेर दवाइ लाभके बदले हानि करती है यह ही दशा हमारी हो रही है ।

सौ वर्षों के पहला से, आज कइ गुणा ओलम बढ कर है पर सो वर्ष पहले का प्रेम–स्नेह–ऐक्यता न होने से हमारी प्रतिदिन गिरती दशा दीरवाइ दे रही है कीसी एक बात का सुधारा करने को सैंकडो लिखे पढे विद्वान एकत्र होते है किन्तु आपसका प्रेम–स्नेह न होने से एक सुधारा के बदले दूसरे अनेक झगडे उत्पन्न हो जाते है प्रेमस्नेह न होने से पंच पंचातियों शिथिल पड गइ है न्याति जातिका गौरव गुम हो गया है. वडे छोटे के कायदा मर्यादा आदर सत्कार विनयादि लुप्त हो गया स्वच्छंदता बढ गइ. कारण हमारे पर अभि कीसी का नेतृत्व नहीं है कहा है.

अपत्त बहुपत निबल पत, पत बालक पतनार ।
नरपुरी का तो क्या कहना, पर सुरपुरी होत उजार ॥ २ ॥

जिस देश में जिस नगर में जिस ग्राम में जिस समाज में जिसे घर में एक संबलपति न हों या बहुतसे पति हो या निर्बल पति हो या अज्ञान बाल पति हो या औरत का पतित्व हो तो कवि कहता है की मनुष्यपुरी का तो क्या परन्तु स्वर्ग मे अमरपुरी भी उजड सी हो जाति है वास्ते जितनी, श्रेलम की आवश्यक्ता है उससे भी हजारगुणे आपसमें प्रेम—स्नेह ऐक्यताकी जरुरत है। अब प्रथम यह सवाल उठता है की आपसमें प्रेम स्नेह वढनेका मूल कारण कौनसा है उसे ढुंढना चाहीये? समान दृष्टिसे तो आपको अनेक कारण प्रेमवढानेका मीलेगा, किन्तु मुख्य कारण यह है कि——

परकर मेरु समान । आप रहे रज कण जिसा ।
धन्य पुरुष जग विच । ज्यांरो राम रखालो राजिया ॥ १ ॥

दूसरे सज्जनोंको मेरू सदृश समझ आप रजकी माफीक बन जावे वह भी सचे दीलसे "नकीलोक देखावु डुगले भक्त" का यांफे लघुतामें बडा भारी गौरव है.

लघुतासे प्रभुता मीले । प्रभुतासे प्रभुता दूर ।
जो लघुता धारण करे । तो प्रभुता होय हजुर ॥ १ ॥

पूर्व जमाने में हमारे पूर्वजों के वरतावसे या रत्नोंकी लिखावटसे साफ मालुम होता है की हमारे पूर्वजोंमे पूर्वोक्त प्रवृत्ति अधिक थी जिनसे ही उनके सर्व कार्योंमें प्रेम—स्नेह—ऐक्यता थी. आज हम

अहम् पदके गज पर आरूढ होगये खुद प्रभुताकी पोषाक पहन ली; जिससे हम जहां जाते है वहांही हमारी लघुता हो रही है. इस अहमपद का संचार केवल हमारे अन्दरही नहीं किन्तु हमारे धर्मगुरुओंके अन्दर भी कम नहीं हुवा है यह हमारी अवनतिका पहला मंगलाचरण हुआ है अगर इसे आज मीटा दी जावे तो कलही हमारे आपसका प्रेम पुनः नवपल्लव हो जाय.

दूसरा आपसमे प्रेम बढानेका यह भी एक कारण है की " वचन मधुरता " प्रिय वचन बोलना एक एसी वस्तु है की जिससे तमाम दुनियो वश हो जाती है अगर कीतना ही क्रोधातुर आदमी हो परन्तु मधुर बचन की असर उनके हृदय पर पडतां ही वह शान्त हो जायगा यंत्र तंत्र मंत्र भूतिकर्म और वशीकरण वह जाय तो वह एक प्रिय वचन ही है एक कवीने प्रिय वचन बोलनेका कीतना गुण बतलाये है उसेभी आप सुन लिजीये.

वचने होय मिलाप वचन सब वैर मीटावे ।
वचने दोलत होय, वचन अमृत रस पावे ।
वचने पावे राज, वचन विद्या बल आवे ।
वचने शील संतोष, वचन वैराग्य उपजावे ।
वचने जावे रोग. वचन सुर लच्छी लावे ।
कवि कहे सुन चतुरनर, वचनसे सब आदर पावे ॥२॥

इस कवितामें तो आप ठीक तोरपर समझ गये होंगे कि इस संसारमें मनुष्यकी परीक्षा ही वचन बोलनेपर होती है मधुरवचन

आपसमें प्रेम, स्नेह, ऐक्यता बढानेके और भी तो बहुतसा कारण है; किन्तु मैंने आपका टाइम बहुत लीया है वास्ते हाल एक हफ्तेमें आप लघुताया मधुर वचन बोलना और सर्व कार्योंमें विवेक रखना सीख ले, समय पा कर मैं पुनः आपकी सेवामें उपस्थित होउंगा एकदम भोजन ज्यादा होनेसे अजीर्णका भी भय रहा करता है। अस्तु.

अन्तमें मैं मेरे विद्यार्थीयोंसे नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि आपने सबभाइ एक विद्याचार्यके शिष्य है वास्ते आपनेमें प्रेम, स्नेह, ऐक्यता, लघुता, नम्रता, मधुरता और विवेक सदैव बढना चाहिये. दुनिया एसी न बोल उठे की "परोपदेशे पांडित्यम्" "आप गुरुजी बैंगण खावे दुजोंको प्रमोद सुनावे." एसा न हो यह ख्याल अपनेको सदैव रखना चाहिये. "लिखना पढनेका यह ही सार है." इतना ही कह मैं मेरे स्थानको स्वीकार करता हूं अनुचितकी क्षमा प्रदान करावे शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

आपका,

जवेरीमल कठारीया

मेम्बर श्रीज्ञानप्रकाशमण्डल—रूण.

भाषण नम्बर ११

प्यारे समाज हितैषीयों,

इस समय मेरे हृदय हौदमें दो सरिताओं घुम चक्र लगा रही है अगर कोइ महाशयजी सवाल करेगा की वह कौनसी है ? उत्तरमें

कहना होगा की अव्वल तो आप समाज अग्रेसरोंकी उपस्थिति देख हर्ष सरिता एक तरफसे उमंग उठी है. दूसरी " मारवाडी महिला समाजका चित्र " रूपी शोक सरिताने हमारी नौनाडी बहोनर कोटोंको तोड इतना तो वेगसे उच्छाला मारा की उस हर्ष सरिताको उलंग हमारे कण्ठ तक आ पहुंची है अगर उस वेगको आप श्रीमानोंके सन्मुख बाहार न निकाला जावे तो मुझे भय है की इस नाशमान शरीरके साढातीन क्रोड दरवाजाको तोड निकलेगा, वास्ते ही मैंने उस वेगको कण्ठ द्वारा आपकी सेवामें निकालनेका साहस कीया है अगर इस पर भी आप ध्यान न देंगे तो मैं मेरे नेत्रों द्वारा उस नदीयोंको वहांके मेरे हृदयको शान्त करूंगा आप भी अपने नयनयुगलको शितल कर गुपचुप घरमें बैठ जाइये इसके सिवाय हमारा दुःख मीटानेका दूसरा कोइ भी उपाय नहीं है ।

पूज्य समाज नेताओं ! कहनेकी आवश्यक्ता नहीं है की जगत की उन्नति या अवन्नति का आधार जगत् की माताओं पर ही निर्भर है. पूर्व जमानामें हमारे हिन्द की विदूषी माताओं कैसे कैसे पुत्र रत्नों को पैदा कर इस हिन्द को उन्नति के सिखर पर पहुंचा दिया था. जिनों की उज्वल कीर्ति हमारे इतिहास के पृष्ठों पर सुवर्ण के अक्षरों से अङ्कित है जिस को पढ पढ के आज के विद्वान या इतिहासवेत्ता, युरोपियन लोक भी चिकित हो जाते है. आज हमारी मारवाडी महिला समाज की तरफ हम दृष्टिपात करते है तब नेत्रोंसे रक्त विन्दु टपकने लग जाते है. अबी भी हमारे समाज अग्रेसरों की कुम्भकरणी निंद्रा दूर नहीं हुइ है तो क्या हाल कुच्छ बाकी रहा

है। बोलो नहीं जी नहीं, अमावसका अन्धकार में और कौनसा चमत्कार होता है।

पूर्व जमाना में हमारी माताओं चाहे राजा की भार्या महाराणी हो, चाहे कोट्याधिपति शेठ की वल्लभ शेठाणी हो, किन्तु बचपणा में ही वे अभ्यास कर सब किस्म का एलम हांसल कर लेती थी चार प्रकार की औरतों यानि पद्मिनी चित्रनी हंसनी संखनी के लक्षण ठीक तौर पर पैच्छानती थी। गृहकार्योंमें हमारी माताओं इतनी तो चतुर थी की अपने गृहकार्य में दूसरों की अपेक्षा तक नहीं रखती थी। जैसे कलाकौशल्य=कांतना बुनना सीवना गुंथना कसीदा करना वस्त्रारक्षा करना=रक्षण करना=रंगना, बान्धना, इत्यादि पीसना खांडना दलना रांधना पाक बनाना सब तरह की रसोई तैयार करना खाना पीना खीलाना आयेहुवे अतिथीओं की यथायोग्य हिफाजित करना, लीपना समारना घोलना चित्रकारी करना लिखना पढना काव्य रचना करना स्वर तालसे गाना, शय्यागृहकी सजावट, सोलह शृंगार कर पति मन-रंजन करना, पति आज्ञा पालन, वृद्ध जनोंकी लज्जा या विनय भक्ति सेवा करना, पशुधन पालन-रक्षण, दुग्ध विलोना, गृह वस्तु संग्रह-रक्षण करना, अमान्द रस्त का ख्याल पर हैसियत माफीक पोषाक पहनना, ऋतुकर्त्तव्य, गर्भपालन-रक्षण, संतान पालनपोषण, बचपनसे अच्छी शिक्षा देना, विद्याभ्यास कराना, देवगुरु धर्म पर पूर्ण श्रद्धा के साथ पुन्यक्षेत्र को सदैव स्मरणमें रखना, दीन दुःखीयों का उद्धार करना, मधुर भाषा और सब के साथ मैत्रीभाव रखना इत्यादि महिलाओं की चोसठ कलाओंमें हमारी माताएं प्रवीण थी

उस जमानेमें लक्ष्मी तो हमारे घरों में दासी बनके रहती थी तनसे मनसे धनसे हमारी समाज कैसी समृद्ध थी यह हमारी विदूषी माताओं के पुत्ररत्नों के असंख्य द्रव्य से कीये हुवे पुन्य कार्य प्रमाण दे रहे है " तपीयों मुत्तो तेजसी " " राजा नो म्हगनाथ " "पहले शाह और पीच्छे पादशाह " " ओसवाल भोपाल " इत्यादि विरुद भी हमारी आबादी बनला रहे हैं. हमारी समाज का शौर्यता वीर्यता धैर्यता गाम्भीर्यता सादाइ सरलाइ नरमाई पराक्रम बुद्धि विज्ञान हुन्नरोद्योग जाति न्याति का अभिमान धर्मगौरव जगत् वात्सल्यता और परोपकार दुनियोंमे प्रसिद्ध था. सत्ययुगमें तीर्थंकर चक्रवर्ति बलदेव वासुदेव मण्डलीक राजा और बडे बडे शेठ सेनापति हुवे थे किन्तु इस पंचमकाल के अन्दर भी विदूषी माताओंके पुत्र रत्न जैसे विमलशा भोमाशा भैंसाशा बालाशा धनाशा जावडशा जगडुशा श्यामाशा समराशा गीसुशा कर्माशा देवाशा धरूशा लालाशा उदायन पेथड उवड वस्तुपाल तेजपालादि साढा चुम्मोतेर साहा से हमारी समाज विभूषित थी. जिनों के किये हुवे पवित्र कार्य आज भी जगत् विख्यात है. यह सब प्रभाव शिक्षण पाइ हुइ विदूषी माताओंकाही था जबसे हमारी समाज में स्त्रीशिक्षाका क्रमशः अभाव होता गया तबसेही हमारी पतन दशा होने लगी. क्रमशः आज हमारी क्या दशा हो रही है हमारी माता बहेनो पर दुर्दैवका कैसा कोप है अब भी हमारा स्त्री शिक्षण पर कीतना दुर्लक्ष है जिसका क्या फल हुवा वह भी संक्षीप्तसे सुना देना अनुचित न होगा ।

अव्वल तो हमारी बहनों लिखी पढी नहीं है अक्षर मात्राको तो काली भैंस ही समझ बेठी है । विगर लिखे पढे कीसी प्रकारका

लम हांसिल नहीं हो सक्ता है साथमें हुन्नर भी सब खोबैठी है उद्योगमें तनी तो आलसु बन गइ है कि खुद अपना कार्य भी वह कर नहीं सक्ती है. हमारी बहीनोंका अपने बालबच्चोंसे पशुवों जीतना भी म या हित दिखाई नहीं देता है. पति आज्ञा पालनकी तरफ दृष्टिपात करते है तो उन पतियोंके कलेजा दग्ध तरूकी माफीक भस्मीभूत हुवा ही दीखाइ देते है अक्सरसर कर देखा जाता है तो उन पुरुषोंके कारुण्य शब्दसे यह ही पुकारें होती है की—क्या करे ! 'घरमें नहीं मानते है' जब पतियोंकी भी यह हालत है तो सासु ससरा या वृद्ध जन तो अपनी सेवा चाकरीकी आशा भी क्यों रखे ! बीचारी सासुओं तो उन महिलाओंसे बहुत डरती रहती है. कारण उसे कुच्छ भी कह दीया जाय तो वह बहुओं अपने पतियोंको ले अलग घर मंड बेठती है फीर स्वच्छंद चारिणी होनेपर तो " पति पाणी भरो घरमे तो नेनारी मारो हीज चलन रहेसी " यहां तककी अपठित ओरतोंका पति अगर अपने मातापिताओंकी सेवा चाकरी करनी चाहताहो तो भी ओरताका हुकम बिगर नहीं कर सके । " नमस्कार है अविद्या देवीको "

मातृ कर्तव्य तो वह अज्ञान ओरतें बिलकुल जानती भी नहीं है और गर्भका पालन कैसे करना चाहिये. कोनसे समयपर कैसा पदार्थ काममें लेना चाहिये. गर्भके पथ्यकारी कौनसा पदार्थ है गर्भकी स्थिति यहांतक कैसी रहती है गर्भ पालन बराबर न करनेसे क्या क्या नुकशान है इन बातोंके लिये तो अशिक्षित ओरतोंको अगर गदासणीयों कह दी जाय तो भी अनुचित न होगा ! अब प्रसूत समये देखा जावे तो हमारे देशकी दायों एसी अशिक्षित है की सैंकडे

बालीम ओरतोंका अकाल मृत्यु प्रसूत समय हो जाता है और सेंकडे साठ बालकोंका मृत्यु इसी कारणसे होता है यूरोपियन लोकोमें ओरतों या दायों शिक्षित होनेसे सेंकडे दश मृत्यु भी एसे नहीं होते है आगे बचे हुवे लडकोंका संरक्षण के हाल भी सुन लिजिये. ठीक समयपर बच्चोंको खुराक न मीलनेसे वह रूदन करता है तब अपना स्वार्थ के लिये बच्चोंको अमल देना सरू कर देती है इतनासे संतोष न होतो इस कदरसे मारपीट करती है की इधर उधर फेंक देती है जीससे केई बच्चोंके अंगोपांगको हानि तक पहुंच जाति है. कीतनीक बहेनो उन बच्चोंको एसे भी पाठ पढानि है जैसे "सुजा नेना बागड लोले + + थने बाबो खाजासी रोमनि + + ठालाभुला + होलीरापूल + राखउडीया + मरजा तो पाप कटे + + मशाणोमें मेलुं + + चुल्हामें बालुं + + सापखादा + + पापी + + भंडेलावरी पाल मेलुं + + तापीरे तुंड नाकु + + खोजगया + + थारीमाने रोवे + + रांड + मालजादी + चोरोने देवुं + + गदेडी + डाकण + मारो काल जो क्यों खाय है + + रंडने ढेढीरे दं इत्यादि पाठ तो हमारे बालबच्चोंको प्राथमिक शिक्षामें पढाये जाते है हमारी बहनोंको ज्ञानके न होनेसे वह असभ्य अश्लेष भाषाओंमें एसे खराब लज्जाहीन गालीयों गीत गाती है की बाजे बाजे वेश्याओंको भी सरमाना पडता है । वह ही असर हमारे बालबच्चोंके कोमल हृदयमें हुवा करती है की वह बचपणसे ही दुराचारी बन जाते हैं यहां तक तो हमारी माताओंकी तरफसे शिक्षण मीलता है। सात आठ वर्षकी लडकी होती है तब उसे गोबर चुगनेको भेज दी जाती है अगर एक ओडीकुंडा भरके गोबर ले आवे तो

यह लडकी पास गीनी जाती है लडकाको अगर पाठशाला स्कूलमें पढनेको भेजते हैं वह एकमें भी मक गीनना शीख जावे और मुनीके कागद पढले मय पिताजी उस लडकाको पाठशाला छोडाके दुकानके काममें लगा देते है अगर अध्यापक कहे की शेठजी ! कुच्छ संस्कृत व्याकरणका भी अभ्याम आपने लडकेको कराइये ? शेठजी गुस्सासे बोलते है की हमारे कोनसा टीपणा बनाना है हमारा लडका ब्राह्मण नही है अंग्रेजीके बारेमें शेठजी बोल उठते है की हमको कोइ स्टेशन की नोकरी नही करनी है या डाकमें नोकर नही रहना है इत्यादि शब्दोंपर आजके विद्वान मुग्ध बन जाते है इसका उत्तर भी मो बतावे ? हमारी अपठित माताओंकी अधिकता भी यह है की दो दो चार चार वर्षों के लडकोंकी सादीयों कर देती है फीर पिताजी आठ दश बारह वर्षोंके कोमल बालकोंका लग्न कर देते है. चाहे वह बालवीर्यका नाश कर उम्मर तक दुःखी क्यों न बनजाय ! घरमें विधवाओंकी बाढ क्यों न बनजा पर शेठाणीजीको तो नानी बीनणी के रमझोल बीछीये और नानडीया जमाइका लाड कोड सुन कर अपना जीवन सफल करना है. शेठाणीजी बोलती है की "सुणोनी हो नेनारा बाप काले मरजामो पछिला आपांरा हाथोसें नेनारो विवाह कालो काले मोटा हो जासी " यह हमारी मारवाडी महिलाओंकी दशा है इस दुःखासे मारवाडके जिस ग्रामोंमें हजारो घर थे वह सेकडो घर रहे है. सेकडों थे वहां पंच—दश घर रहे है और सो पचास घर थे वह बिलकूल शून्य पडे है. यह सब अशिक्षाका ही प्रभाव है ! पूज्य बुजर्गो ! अब भी आपकी आखों नही खुलती है तो कब जागोगे ? बनावो मो सही ।

अब हमारी बहेनोंके गृहकार्यके हाल भी जरा सुन लिजिये। जिस खुराकपर हमारा जीवन है—हमारा शरीरका निर्भर है आरोग्यताकी आशा रखी जाती है वह हमारा घरोंमें दो दो चार चार मासके पीसे हुवे मशाला हलदी धाणा मीरची मेंदा वेसण और आटा मीलता है जिस्से प्रायः असंख्य जीवोंकी उत्पति इलीयों आदि त्रस जीव पड जाते हैं। बिलकुल वक्स (निरस) हो जाते है जिसके खानेसे शरीरमें अनेक प्रकारकी बीमारीयां खडी हो जाति है साक पातकी तरफ देखा जावे तो केइ आर्सोंका पडा हुवा मीलेगा. रसोइ बनानी भी पुरी नहीं आती है कौनसी रुतुमें कोनसा भोजन पथ्य होता है वह तो विचारी जाने भी क्यों। वासी विदलमें तो गामडेकी बहनों समझती भी नहीं है पर्व—तीवार या महेमान आनेपर तो हलवाइको बुलावे तब ही वह पकवान बना सके. चाहे मूल्यका अभन खावे काम चलावे पर स्वयं कर भी नही सक्ती है। कीतनीक बेहनो तो एसी आलसु बन बैठी है की अपने तनपर पहननेका वस्त्र घाघरा कांचली तक भी नही सीजानती है बालकोंके टोपी अंगरखा का काम पडने पर दरजीको बुलाना पडता है इतना ही. नहीं बल्के दो दो चार चार मास तक कपडा धोनेमें भी नही समझती है सिर में या कपडोमें जुवो लीखो पड जाती है तब शिन कालमें लडके बेठ उसे मारना जरूर जानती है और उसमें भी अज्ञानलोकोने दया मान रखी है।

थोडा बहुत कपडा मैला हो जाता है तब अपने पतियोंपर हुकम करती है की कपडा लावो वह मेला कपडा इधरउधरकी धुनारियों डगके लेजाती

यह लडकी पास गीनी जाती है लडकाको अगर पाटशाला स्कूलमें पढनेको भेजते हैं वह एकमें सौ तक गीनना शीख जावे और मुडीके कागद पढले तब पिताजी उस लडकाको पाटशाला छोडाके दुकानके काममें लगा देते है अगर अध्यापक कहे की शेठजी ! कुच्छ संस्कृत व्याकरणका भी अभ्यास अपने लडकेको कराइये ? शेठजी गुस्सासे बोलते हैं की हमारे कोनमा टीपणा बनाना है हमारा लडका ब्राह्मण नही है अंग्रेजीके बारेमें शेठजी बोल उठते हैं की हमको कोइ स्टेशन की नोकरी नही करनी है या डाकमें नौकर नही रखना है इत्यादि शब्दोंपर आजके विद्वान मुग्ध बन जाते है इसका उत्तर भी तो क्यादे ? हमारी अपठित माताओंकी अधिकता तो यह है की दो दो चार चार वर्षो के लडकोंकी सादीयों कर देती हैं फीर पिताजी आठ दश बारह वर्षोके कोमल बालकोंका लग्न कर देते हैं. चाहे वह बालवीर्यका क्षय कर उम्मर तक दुःखी क्यों न बनजाय ! घरमें विधवाओंकी वाड क्यों न बनजा पर शेठाणीजीको तो नानी बीनणी के रमझोल बीछीये और नानडीया जमाइका लाड कोड सुन कर अपना जीवन सफल करना है. शेठाणीजी बोलती है की "सुणोनी हो नेनारा बाप काले मरजासो पहिला अपांणा हाथोसे नेनारो विवाह करलो काले मोटा हो जासी " यह हमारी मारवाडी महिलाओंकी दशा है इस कुप्रथासे मारवाडके जिस ग्रामोंमें हजारो घर थे वह सेंकडो घर रहे हैं. सेंकडो थे वहां पंच-दश घर रहे है और सो पचास घर थे वह बिलकुल शून्य पडे है. यह सब अशिक्षाका ही प्रभाव है ! पूज्य बुजर्गों ! अब भी आपकी आखों नहीं खुलती है तो कब जागोगे ? बतावों तो सही ।

अब हमारी बहेनोंके गृहकार्यके हाल भी जरा सुन लिजिये। जिस खुराकपर हमारा जीवन है—हमारा शरीरका निर्भर है आरोग्यताकी आशा रखी जाती है वह हमारा घरोमें दो दो चार चार मासके पीसे हुवे मशाला हलदी धाणा मीरची मेंदा वेसण और आटा मीलता है जिस्मे प्रायः असंख्य जीवोंकी उत्पति इलीयों आदि त्रस जीव पड जाते है। बिलकुल थक्स (निरस) हो जाते है जिसके खानेसे शरीरमें अनेक प्रकारकी बीमारीयां खडी हो जाति है साक पातकी तरफ देखा जावे तो केइ असोंका पडा हुवा मीलेगा. रसोइ बनानी भी पुरी नहीं आती है कौनसी रूतुमें कोनसा भोजन पथ्य होता है वह तो विचारी जाने भी क्यों। वासी विदलमें तो गामडेकी बहनों समझती भी नहीं है पर्व—तीवार या महेमान आनेपर तो हलवाइको बुलावे तव ही वह पकवान बना सके. चाहे मूल्यका अभक्ष खावे काम चलावे पर स्वयं कर भी नही सक्ती है। कीतनीक वेहनो तो एसी आलसु बन वैठी है की अपने तनपर पहननेका वस्त्र घाघरा कांचली तक भी नही सीजानती है बालकोंके टोपी अंगरखा का काम पडने पर दरजीको बुलाना पडता है इतना ही नहीं बल्के दो दो चार चार मास तक कपडा धोनेमे भी नही समझती है सिर में या कपडोमें जुवो लीखो पड जाती है तब शित कालमें तडके वेठ उसे मारना जरूर जानती है और उसमें भी अज्ञानलोकोने दया मान रखी है।

थोडा बहुत कपडा मैला हो जाता है तव अपने पतियोंपर हुकम करती की कपडा लावो वह मेला कपडा इधरउधरकी धूतारियों ठगके लेजाती

मारी बहनोंको क्या परवा है की कपडा कीस भावसे मीलता है चरखा कांतना तो वह बिलकूल भूल ही गइ है चरखा की टैइममें लडाइयों झगडा सनिंदा ईर्षा द्वेषादि क्लेष करना जरूर सीख गइ है घरकी सजावट की तरफ दृष्टिपात कीया जावे तो पशु तो और भी जमीन साफ कर बेठते है पर अशिक्षत औरतों अपनि सुनेकी शय्या कभी सालभरमें एकाद, वख्त ही संभालनी है धनधानगी जैसे गुरीसे निकलते है एक तरफ कचरा पडा है एक तरफ लडके टटी–पेसाब कीया जिसकी दुर्गन्ध आती है एक तरफ चोपाइ गुदडे पडे है इस दरीद्रतासे तो हमारी लक्ष्मीदेवी कोपकर गुजरातादि देशमें चली गई है उन बेहनो के घरोंमें कुत्ते को बडाही सुविधा रहता है खानेको पीने को सहजमें मील जाता है और बेहनों के भी हांड धोनेका काम भी नही पडता है अपठित बेहनो इतनी तो भोली हुवा करती है की बजाज माली लखारा मीयाीयारा आदि कोइ भी उसे ठगके लेजाते है पहले के जमाने में हमारे घरोंमें गांयो भैसीयों आदि पशुधन पाला जाता था तब दुध घृत दही छास आदि पौष्टीक पदार्थसे हमारी संतान बलीष्ट रहती थी आज हमारी बेहनो को पैसोकी गाय रखनि अधिक पसंद करती है होली दीवाली या तपश्चर्याके पारणेमें झट दो पैसेका दुध ले आती है चाहे वह रातका वासी हो चाहे उसमें पाणी मीलाया हुवा हो वह भी जीसके वास्ते हो, वह ही खा सके दूसरे तो बेठे बेठे ताकते ही रहे इत्यादि. इस कर्म कथनीको कहां तक कही जाय. तात्पर्य यह है की स्त्रिशिक्षण के अभावसे हम तनसे मनसे धनसे कमजोर हो रहे हैं हमारा गृहकार्य बिगड रहा है हम खरचसे तंग हो रहे है हमारा जीवन शुन्य सा हो रहा है, यह तो हुइ हमारी संसारीक दशा ।

आगे बढके हम धर्म पक्षकी तरफ दृष्टिपात करते हैं तब तो हमारा होस खतम हो जाता है जो वीतराग धर्ममें न देखी, न सुनी, वातों हमारे देखने सुननेमें आती हैं लाल पीला छोड केवल सफेद पहेननेसेही शास्त्रकारोंने धर्म नहीं माना है आज हमारी दशवीस बेहनों उपासरेमें एकत्र होती है तब सब नगरकी खबरोंके तार वहां मील जाता है केइ अपठित ओरतें साधु वेशको धारण कर लेती है वह अपने दिन पूरा करने के लीये अपठित बेहनोंको कहती है हे बाइ! थारी सासु थने सोरी नहीं राखे तथा थारो धणी थांरेसे राजी नही है तो तुं मारा कने दीक्षा लेले पछे थने जैपुर जोधपुर बीकानेर दीली आगरे कोटे बुंदि गुजरातादि नवा नवा देश दीखाशो नवा नवा श्रावक श्राविकाओ थारा पगोमें माथो देशी. संसारमें कांइ पड़ी हैं तथा तुं तो विधवा है लेले लेले दीक्षा लेले घरमें पीसणो पोवणो काम करनो आदी कीतनी तकलीफों है वंदीकडीमें क्यों पडी है कटेइ जाणो आणो कीणसे बोलनो लाचनो थारा हाथमें नहीं है। दीक्षा लेले पछे सब काम मीट जासी गोचरी करी के बस। कम अकल आप अयोग्य होने पर भी कह उठती है की हां महाराज ! दीक्षा तो लेवाने मैं तैयार हुं; परन्तु मारा सासु सुसरा या पति आज्ञा नहीं देगा। गहेली ! आज्ञाकी फीकर क्यों करे ! मने आज्ञा नहीं देते थे जब में घरमें कलेश झगडा कर धरणा दीना तब आपसे आप आज्ञा देदी । मारी चेलीरे पास जेवर था वह इधर उधर उडाना सरु कीया तो उसी वखत आज्ञा देदी. तुं भी इण माफिक कर थारे कोनसी देरी है इत्यादि अविनयके पाठ पहलेसे पढाया जाता है उस शीक्षाका फल दीक्षा लेनेके बाद गुरुणीजीकों

ऐसा भोगवना पड़ता है कि-उम्मर भर सुखसे निंद्रा नहीं ले सकती है। लड़के देखादेखी वह स्त्रीयों ओरमें सिर मुंडानेको तैयार हो जाती है एसी अशिक्षितोंने इस महान् पदका महत्वकों कैसा बना दीया है उसे आप देख ही रहे हो कि बहुता। अगर उसे पुच्छा जावे की दीक्षा क्या वस्तु है तो वह इतना ही नहीं समझती है की उसका जवाब देवे. कइ तो आठ दश वर्षोकी बालाओंको धर्ममें डाल देती है यह सब अशिक्षा-अज्ञानका ही महत्व है की यह धर्म धर्म लोगों की श्रद्धा शिथील कर बड़ा भारी शासनको नुकशान पहुंचा रही है इस्सिगतका बेपीगोगमें उसे कोइ कहनेवाला भी नहीं है।

सज्जनों! हमारी संतान औरतों के हाथ में है हमारा गृह जीवन औरतोंका हाथमें है हमारी उन्नति औरतों के हाथमें है हमारे बाल बच्चोंको अच्छा शिक्षण देना औरतोंके हाथमें है अगर हमारी महिला समाजमें अच्छा शिक्षण न दी जावे इन त्रुटीयोंका सुधारा न कीया जाय तो हमारी भावी उन्नति होना हजार हाथ दूर है चाहे हम हजारों लाखोंका खरचा करदें चाहे हम ऊंचे घोडे भाषण देवे चाहे हम हजारों कौनायों ल्पा दे किन्तु मूल कुराल विगर डाला पत्र पुष्प फल की आशा करना "आकाशमें कुसमोंकी आसा समान है"

पूज्य समाज अग्रेसरो! आप समाजके नेता हो आप पर समाजका आधार है आपही समाजकी उन्नति करनेवाले है समाजका विश्वास आपपर रहा हुवा है अगर अब तक भी आपकी कुंभकरणकी निंद्रा दूर न होगी तो क्या सर्वांश खो देनेके बाद जागृत होंगे अगर समाजकी गीरती दशाको आप देखतेही रहोगे तो क्या आपको समाज द्रोहीविश्वासघातका दोष नहीं लगेगा? आज सामान्य जातियों भी

अपनी अपनि समाजमें अविद्या के साथ अनेक हानीकारक रूढ़ियोंको जलाजली दे रहे है और ओसवाल जातिकी ओरतोंके लिये हाँसी कर रहे है क्या इस पर भी आपकी जातिका गौरव आपकों नही है क्या आप की अकल हुशीयारी विद्वता मोटाइ अभिमानादि को आपसकी फूट कुसंपनेही खेंच लीया हैं की समाजकी तरफ आप बीलकूल लक्षन ही हेते हो। जागो, संभालो ! समाजके सबसे पहले यह कार्य करो की मारवाडी महीला समाजको अच्छा शिक्षण मीले तांकी भावी संतान पर उन्नतिकी आशा रखी जावे। अन्तमें में नम्रतापूर्वक आपसे क्षमा याचना करता हूं की में एक नवयुवक समाजकी पतित दशा देख, मैं— मेरी हैसियत के सिवाय भी निवेदन कीया है पर क्या करूं वह शोक सरिता मेरे हृदयमें ठर सकी नही वास्ते ही आपके सन्मुख अर्ज करी है मेरा यह अभिप्राय नहीं है की मारवाडमें सब ओरतो अशिक्षत है बडे बडे नगरोंमें स्यात् केइ ओरतो शिक्षित भी मील सक्ती है पर वह बहुत कम है उनको भी अशिक्षत ओरतों की संगतका रंग जरूर लग जाता है और मेंने जो कुच्छ कहा है वह अपठितोंके लिये ही कहा है-

गामडोमें कीतनेक लोक विद्याके दुस्मन बन बेठे है उनका ख्याल है की एक घरमें दो कलमें नही चलनी चाहिये. अगर ओरतों पढ जावेगी तो फीर पुरुषोंका कहना नहीं मानेगी स्वइच्छाचारणी बन जावेगी भलो ओरतें पढ जावेगी तो पुरुष क्या करेंगें। इत्यादि। उन भाइयोंका यह ख्याल बिलकुल गलत है इसी कुविचारोंसे मारवाड की ओरतो अपठित रह कर हमारा सर्व श्रेयांस खो बेठी है यहां तक की ओरतोको एक बच्चा पैदा करनेवाली मशीन या पगकी मोजडी ही समझ रखी है पर अब ओरतोकों भी समझना चाहिये

की संसारमें ज्ञान प्राप्त करनेका हक पुरुष—स्त्रियोंको कुदरती बराबर है. देखिये भगवान आदीश्वरने युगलधर्म हटाके कर्मभूमियोंका नीति धर्मका प्रचार कीयाथा तब भरत बाहुबलादि को पुत्रोंको ७२ कला और ब्राह्मी सुन्दरी आदिको महिलाओंको ६४ कलाओंका अभ्यास करवा के—जगतमें स्त्रि—पुरुषोंको बराबर हक दीया है.

सज्जनो पठित औरतों नतो स्वइच्छाचारिणी होगी न क्लेश कदाग्रह करेगी न अपने बाल बच्चोंको अपठित रखेगी अर्थात् स्त्रि शिक्षणसे कीसी प्रकारका नुकसान नहीं परंतु अनेक कीस्मका फायदा है संसारकी उन्नतिका मुख्य कारण है वास्ते हमारे समाज अग्रेसरोंको चाहिये की सर्व कार्योंको छोड पेस्तर स्त्रि शिक्षणकी तरफ लक्ष देकर प्रत्येक ग्रामोंमें शिक्षण हुन्नरोद्योगादि संस्था स्थापित करे उनके खर-चके लिये धनाढ्य दानवीरोंको चाहिये की वह ओसरमोसर विवहा लग्न सादि फैन्सी पोषाको और कोरट कचेडीयोंमें जो फाजुल खर-चामें हजारो लाखों रूपैयोका बलीदान करते हैं, उनके बदले अपने बाल बच्चोंको शिक्षाप्रदान करें इसमें ही आपका भला है नाम्वरी है कल्याण है शोभा है यश: कीर्ति है दुनियोंमें अमर नाम है आशा है की आप सज्जन इस मेरे फूटे तुटे शब्दों पर अवश्य विचार कर यथाशक्ति तन मन धनसे समाज सेवाका लाभ उठावेंगे. इत्यलम्.
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति.

आपका,

वसतीमल कटारीया

मेम्बर श्री ज्ञानप्रकाशक मण्डल—मु:—रूण—मारवाड.

— ❦ —